ISSN 2349-6614

नवम्बर, 2018

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिवाली पर्व है पुरूषार्थ का
दीप के दिव्यार्थ का
देहरी पर दीप एक जलता रहे
अंधकार से युद्ध यह चलता रहे।
हार्दिक शुभकामनाएं

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक 9 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth

(DEEMED TO BE UNIVERSITY)

Airport Road, Pratap Nagar, Udaipur – 313001 (Rajasthan)
Phone: 0294-2492440, Fax: 0294-2492441Email: admissions@jrnrvu.edu.in

ADMISSIONS OPEN 2018-19

"NAAC Accredited 'A' Grade University"

Faculty of Management Studies (F.M.S.) Ph. 0294-3296232, 2490632

- Master of Business Administration (M.B.A.)
- Master of Business Administration Human Resource Management (M.B.A.- H.R.M.)

Manikya Lal Verma Shramjeevi College Ph. 0294-2413029, 9460826362 Faculty of Social Sciences and Humanities

Post Graduate :
- M.Phil. – English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History
- M.A.– English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History

Graduate :
- Bachelor of Arts (B.A.) in all subjects
- B.J.M.C

Diploma Courses :
- PG Diploma in G.I.S. and Remote sensing
- Proficiency in English and Communication Skills
- PG Diploma in Yoga Education

Certificate Course : •Spoken English

Faculty of Commerce, 0294-2413029, Mob. 9413481657

- M.Phil. – Business Administration and Accounting
- M.Com. – A.B.S.T., Business Administration
- Bachelor of Commerce (B.Com.)

Diploma Courses
- PG Diploma in insurance and Banking Management
- Marketing and Sales Management
- Taxation •Computer Basics and Accounting

Certificate Courses: •Tally ERP 9.0 •Accounting Technicians (CAT) (in collaboration with ICAI)

Jyotish and Vastu Sansthan, Mo. 9460030605

- M.A. – Jyotirvigyaan
- Diploma in Jyotish and Vastu
- Certificate – Pooja Paddhati and Karm Kand
- Certificate – Bhartiya Jyotish and Hastrekha Vigyaan

Evening College, Mo. 9414166169, 9829332300, 0294-2426432

- M.A./M.Sc. (Psychology) (Inds./Educational/Clinical) (9460490072)
- M.A. Yoga Education (9829797533)
- M. Music, Vocal & Intrumental •M.Sc. Chemistry
- M.Com. – Accounting / Business administration
- M.A. – English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History, Public Administration, Psychology, Yoga
- B.Ed. Special Education (M.R.) (9414291078)(R.C.I. Approved)
- B.A. (all subjects) & (Psychology, Yoga, Rajasthani, Physical Education, Jyotier Vigyan, Drawing)
- B.Com. •B.Sc. •B.Lib. •M.Lib. •BCA •MCA
- B. Music •Bachelor in Special Education (HI/LD) (B.Ed. Special HI/LD)
- Bachelor in Special Education BI (B.Ed. Special BI) •B.A. (Additional) in all subjects.
- PG Diploma – Guidance and Counseling
- P.G. Diploma – Yoga Education (9352500445)
- Diploma in Special Education (MR, HI and VI) *(to be approved)*
- Certificate in Spiritual Values and Human Values •Diploma in Heart Fulness and Health Management
- Diploma and Certificate in Fine Arts •Certificate– French/German/Spanish Language
- Diploma in Dieteties and Applied Nutrition

Department of Business Management Studies, Ph. 0294-2413029, 9460022300

- Bachelor of Business Administration – (B.B.A.)
- Master of International Business – (M.I.B)
- Master of NGO Management •P.G. Diploma – Training and Development

Department of Physical Education, Mo. 9829943205, 9352500445

- Master in Physical Education (M.P.Ed.) •M.A. (Yoga Education)

Department of LAW, Mo.: 9414343363, 9928246547

- LL.M. (2 Year Degree Course)
- LL.B. (3 Year Degree Course)
- B.A. – LL.B. (5 Year Integrated Course)
- P.G. Diploma in Forensic Science (1 Year)
- P.G. Diploma in Labor LAW (1 Year)
- P.G. Diploma in Cyber LAW (1 Year)

Faculty of Computer Science and Information Technology (Ph. 0294-2494227, 2494217, Mo.: 9887285752)

- M.Phil. (Computer Science)
- M.C.A. Lateral Entry in II Year
- B.C.A. (Bachelor of Computer Application)
- B.Sc. (Computer Science)
- M.C.A. (Master of Computer Application)
- P.G.D.C.A
- M.Sc. (Computer Science)

Faculty of Engineering and Technology, Mo. 9829009878, Ph.: 0294-2490210

- B.Tech. - Civil, Electrical, Mechanical, Electronics and Communication, Computer Science Engineering
- Diploma – Civil, Electrical, Mechanical, Electronics and Communication, Computer Science Engineering

Institute of Rajasthan Studies (Sahitya Sansthan) Ph.: 0294-2491054

- M.A. – Ancient History of India, Culture and Archeology
- P.G. Diploma in Archeology

Udaipur School of Social Work, Ph.: 0294-2491809

- Master of Social Works (MSW)
- Master of Social Works (Executive)
- P.G. Diploma in N.G.O. Management
- P.G. Diploma in H.R.M.
- P.G. Diploma in Rural Development
- Certificate Course in Road Safety

Directorate of Janshikshan and Extension Programme Mob. 94 14 737125

- **Department of Agricultural Sciences – 98872 71976**
  -B.Sc. Agriculture Honors
- **Department of Rural Technology and Management – 98872 71976**
  - B.Sc. Rural Technology and Management
- **Department of Women Studies - 0294-2490234**
  -Diploma in Computer Application (D.C.A.)
  -P.G. Diploma in Gender Studies and Technology
- **Maharana Kumbha Sangeet Kala Kendra – 94602 54432**
  -Sangeet Bhushan – One Year Course
  -Sangeet Prabhakar – Two Years Course
- Mangalmurty Indira Gandhi Janta College
- Department of Lok Shikshan
- Department of Community Centres
- Department of Janpad

Faculty of Education
Lok Manya Tilak Teachers' Training College, Dabok (Ph.: 0294-2655327, 2657753)

- M.Phil. •M.Ed. •M.A. (Education) •B.Ed. •B.A. – B.Ed. (Integrated)
- B.Sc. – B.Ed. (Integrated) •B.Ed. (Child Development) •D.El.Ed.
- M.P.Ed. •B.Ed. – M.Ed. (Integrated)

Manikya Lal Verma Shramjeevi Girls College, Dabok, (Ph. 0294-2655223, Mo. 9460856658)

- B.A. •B.Com. •M.A. •M.Com.

Faculty of Medicine
Rajasthan Vidyapeeth Homeopathic Medical College and Hospital, Dabok, Ph.: 0294-2655974-5 Mo.: 9414156701, 9351343740

- Bachelor of Homeopathic Medicine and Surgery (B.H.M.S.)

Department of Physiotherapy Ph.: 0294-2656271, Mo.: 9414234293

- Master of Physiotherapy •Bachelor of Physiotherapy
- Post Graduate Fellowship in Geriatric Rehabilitation

Vocational Education

- Bachelor of Vocation (B.Voc.) in Hospitality & Catering Management

For more information visit University website www.jrnrvu.edu.in

Registrar

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

नवम्बर
2018
वर्ष 16, अंक 9

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs

कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : अंशु शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग येलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा ।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313001

अन्दर के पृष्ठों पर...

06 राजस्थान

भाजपा की जमीन पर बागियों का बवंडर

10 आस्था

शिरडी में 'जनकुंभ'

29 बलिदान
गंगा में समाये 'गंगापुत्र'

34 उत्पीड़न

'मी टू' ने छीना अकबर का ताज

36 अपराध

बाय-बाय...बाबा

कार्यालय पता : 2,'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703, वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email : pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at : www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

मुकदमों के बोझ से दबा इंसाफ

सुप्रीम कोर्ट के 46वें प्रधान न्यायाधीश के रूप में रंजन गोगोई ने 3 अक्टूबर को शपथ लेने के बाद जनहित याचिकाओं और न्यायालय को मिलने वाली चिट्ठियों के आधार पर याचिकाओं को सुनवाई के लिए अपने पास रखने का फैसला किया है। उन्होंने ऐसे मामले जस्टिस मदन बी लोकूर की अध्यक्षता वाली पीठ को भी सौंपे हैं, जो पहले से ही भूमि अधिग्रहण और सेवा सम्बन्धी मामलों की सुनवाई करती रही है। जस्टिस गोगोई ने विभिन्न बेंचों के लिए मुकदमों के आवंटन का नया रोस्टर बनाने का भी फैसला किया है। सुप्रीम कोर्ट में जजों के कुल 31 स्वीकृत पद हैं। जस्टिस दीपक मिश्रा के मुख्य न्यायाधीश रहते 25 जज काम कर रहे थे। उनके रिटायर होने के बाद यह संख्या घटकर 24 रह गई है।

जस्टिस गोगोई अपने सख्त व्यवहार व काम के प्रति समर्पण के लिए न्यायिक क्षेत्र में ख्यात हैं। मामलों को तथ्यों के आधार पर देखते और सुनवाई करते हैं। तथ्यों से अलग जाकर बात करने को वे कोर्ट के समय की बर्बादी और न्याय-प्रक्रिया में गैर-ज़रूरी देरी मानते हैं। इस सम्बन्ध में वे पैरवी कर रहे वकील को टोक भी देते हैं, चाहे वह कितना ही अनुभवी और वरिष्ठ क्यों न हो। उन्होंने 29 सितम्बर को युवा वकीलों को सम्बोधन के दौरान और 3 अक्टूबर को मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ लेने के बाद जो विचार व्यक्त किए, वे कुछ सलाह तो कुछ निर्देश जैसे थे। उन्होंने कहा था कि अदालतों में लम्बित मामलों का अम्बार कम करने के लिए जजों को खुद रास्ता बनाना होगा। उन्होंने हाईकोर्ट के कॉलेजियम सदस्यों से भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग करके लम्बित प्रकरणों के बोझ कम करने के लिए सख्ती करने को कहा और जता दिया कि किस तरह ये उनकी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल हैं।

कुछ समय पहले नेशनल ज्यूडिशियल डाटा ग्रिड (एनजेडीजी) ने यह खुलासा किया था कि देश भर की निचली अदालतों में ढाई करोड़ से ज़्यादा मुकदमे लम्बित हैं, जिन्हें निपटाने में वर्षों लग जाएंगे। ऐसी स्थिति में जस्टिस गोगोई की सलाह और निर्देश सामयिक हैं।

न्यायिक व्यवस्था में पारदर्शिता लाने और न्याय वितरण प्रणाली में शामिल पक्षों तक सूचना पहुंचाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय की ई-कमेटी ने नेशनल ज्यूडिशियल डाटा ग्रिड पोर्टल की शुरूआत की थी, जिसके ज़रिए एक क्लिक पर देश भर के सभी राज्यों की जिला अदालतों में लम्बित मामलों की जानकारी उपलब्ध हो सकी। ऐसा भी नहीं है कि लम्बित मामलों का यह डाटा पहली बार सामने आया है। पहले भी इस तरह के आंकड़े जुटते रहे हैं, लेकिन हैरान और परेशान करने वाली बात यह है कि लम्बित मुकदमों को निपटाने को लेकर माननीय अदालतों और वकीलों की ओर से न कोई पहल हुई और न ही उनमें मुकदमों से जुड़े लोगों-परिवारों के प्रति कोई संवेदना जागी। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 31 दिसम्बर 2015 तक सुप्रीम कोर्ट एवं हाईकोर्टों सहित देश की अन्य अदालतों में दो करोड़ 64 लाख मुकदमें लम्बित थे। तीन वर्ष बाद यह संख्या बढ़ कर तीन करोड़ के आसपास पहुंच चुकी है। इस स्थिति में न्यायमूर्ति रंजन गोगोई से देश की जनता सार्थक पहल की उम्मीद करती है। उनके पास एक जज के रूप में 17 साल से भी ज्यादा का अनुभव है। उनके 13 माह (17 नवम्बर 2019) के कार्यकाल में न्याय के मंदिरों से न्याय रूपी 'प्रसाद' के वितरण में तेजी आएगी, ऐसी आशा की जा सकती है। उन्होंने जजों की रिक्तियों पर बिना किसी दबाव के शीघ्र भर्ती के साथ ही निचली अदालतों में मामले निपटाने की दैनिक समीक्षा की संभावनाएं तलाशने का इशारा करके भी इस दिशा में बहुत कुछ स्पष्ट कर दिया है। लम्बित मुकदमों का अम्बार कम करने और उन्हें तेजी निपटाने के लिए जिस वैज्ञानिक व तार्किक सोच का उन्होंने परिचय दिया है वह बड़ी राहत देने वाला कदम साबित होगा। लम्बित मामलों के निस्तारण के लिए अदालतों की कार्रवाई की दैनन्दिन समीक्षा तो बड़ा कदम होगा ही, साथ ही अदालतों में रिक्त पदों पर भर्ती के त्वरित कदम उठाने के साथ फास्ट ट्रेक कोर्ट के गठन की भी आवश्यकता है। लम्बित मामलों के निस्तारण के लिए वर्ष 2007 के अन्तिम महीने में पंचायत स्तर पर मोबाइल अदालतों की स्थापना की गई थी। हरियाणा के मेवात जिले से शुरू हुई यह पहल लगता है, अब ठण्डे बस्ते में है, जबकि इसे व्यापक आयाम देने की ज़रूरत है। न्यायपालिका के साथ ही जनता कार्यपालिका से भी उम्मीद करती है कि वह भी इस दिशा में गंभीरता दिखाए, हर वक्त राजनीति की ऐनक चढ़ाए ऐंठ में डोलती ही न रहे।

भाजपा की जमीन पर बागियों का बवंडर

राज्य की 50 से अधिक सीटों के परिणाम राजपूत मतदाता प्रभावित करते हैं ऐसे में मानवेंद्र और अन्य राजपूत नेता बीजेपी से नाराज

– जगदीश सालवी

पिछले पांच साल के कार्यों के दम पर राजस्थान की सत्ता में फिर से वापसी का दावा कर रही बीजेपी के लिए इस बार राहें उतनी आसान नहीं हैं जितनी पिछली बार या उससे पहले कभी थीं। क्योंकि मानवेंद्र सिंह, घनश्याम तिवाड़ी, हनुमान बेनीवाल जैसे बागी नेता उसकी जीत के रास्ते में बड़ा रोड़ा बनकर खड़े हैं। सियासत में इन दिनों बागियों के बवंडर रह-रहकर उठते दिखाई दे रहे हैं। पूरी संभावनाएं जताई जा रही हैं कि बागी हुए नेता आसन्न विधानसभा चुनाव में राजनीतिक समीकरण बिगाड़ेंगे और पार्टी को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करेंगे। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि चाहे राजपूत हो या गुर्जर, ब्राह्मण हो या जाट, राजस्थान की सियासत में अहम माने जाने वाला शायद ही कोई ऐसा समुदाय है जिसमें बीजेपी के बागी नहीं हैं। विशेषकर संगठन व सत्ता के नेतृत्व से नाराजगी के कारण इन समुदायों के कई बड़े नेता बगावती तेवर अख्तियार कर चुके हैं।

भारी पड़ सकती है मानवेंद्र सिंह की नाराजगी

सत्ताधारी बीजेपी के बागी नेताओं की फेहरिस्त में सबसे नया नाम राजपूत समुदाय के मानवेंद्र सिंह जसोल का है। पूर्व केंद्रीय मंत्री जसवंत सिंह के बेटे और शिव से विधायक मानवेंद्र ने इसी महीने पार्टी छोड़ दी। 'राजपूतों के स्वाभिमान' को मुद्दा बनाकर बीजेपी से अलग हुए मानवेंद्र लोकसभा चुनाव लड़ सकते हैं। जबकि उनकी पत्नी विधानसभा चुनाव में शिव से ताल ठोक सकती हैं। राजपूत समुदाय बीजेपी का पारंपरिक वोट बैंक माना जाता है। स्व. भैरोंसिंह शेखावत इस समुदाय का बड़ा नाम रहे हैं, जो दो बार मुख्यमंत्री बने और इस समुदाय के वोटरों को पार्टी से जोड़ने में बड़ी भूमिका निभाई। राज्य की 50 से अधिक सीटों के परिणाम राजपूत मतदाता प्रभावित करते हैं। ऐसे में मानवेंद्र और अन्य राजपूत नेताओं की नाराजगी बीजेपी को भारी पड़ सकती है। इसी तरह, छह बार से विधायक घनश्याम तिवाड़ी ने भी बीजेपी के लिए मुश्किलें पैदा की हुई हैं। आरएसएस विचारक, ब्राह्मण नेता और लंबे समय तक बीजेपी से जुड़े तिवाड़ी ने मुख्यमंत्री से मतभेद के चलते पार्टी से किनारा कर भारत वाहिनी पार्टी बना ली है। उन्होंने सांगानेर से चुनाव लडने की घोषणा की है जबकि उनकी पार्टी हनुमान बेनीवाल जैसे अन्य बागियों से मिलकर 'बीजेपी सरकार के कुशासन से लडना चाहती है।' राज्य के सवर्ण मतदाताओं में सबसे बड़ा हिस्सा ब्राह्मणों का है, लेकिन देखना यह है कि इनमें से कितनों को तिवाड़ी और उनके सहयोगी प्रभावित कर पाते हैं।

बागी नेताओं को मनाना जरूरी

इसी तरह किरोड़ी सिंह बैंसला के तेवर भी बागी हो चले हैं। साल 2008 में गुर्जर सहित पांच जातियों को रोजगार और शिक्षा में आरक्षण की मांग को लेकर चर्चा में आए इस गुर्जर नेता ने आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर अपने पत्ते नहीं खोले हैं। लेकिन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे से उनके रिश्ते अच्छे नहीं माने जा रहे। पिछले विधानसभा चुनाव में एक दर्जन से अधिक गुर्जर विधायक बने थे। बैंसला ने हाल ही में भरतपुर संभाग में मुख्यमंत्री राजे की गौरव यात्रा बाधित करने की धमकी दी थी। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इतनी बड़ी संख्या में बागी नेताओं को साधना बीजेपी के लिए टेढ़ी खीर होगा। हालांकि शहरी विकास और आवासीय मंत्री श्रीचंद कृपलानी इससे इत्तेफाक नहीं रखते। उनका कहना है कि, 'बीजेपी कार्यकर्ताओं की पार्टी है नेताओं की नहीं। यहां नेता महत्व नहीं रखते और इस तरह जाने वालों (बागियों) से पार्टी पर कोई असर नहीं होगा।'

हनुमान भी बागी

2008 में बीजेपी के टिकट पर खींवसर से विधायक चुने गए हनुमान बेनीवाल बागी हैं। प्रदेश नेतृत्व से मतभेदों के चलते वह भी पार्टी छोड़ चुके हैं। वे नागौर और शेखावटी के कई जाट बहुल जिलों में बीजेपी का खेल बिगाड़ सकते हैं। चुनाव में बीजेपी के वोट बैंक पर बागियों के असर के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा,'हम बीजेपी को राज्य में तीसरे नंबर पर धकेल देंगे।' बीजेपी से बागी हुए लोगों में किरोड़ी लाल मीणा भी एक बड़ा नाम हैं। हालांकि, पार्टी कुछ माह पूर्व उन्हें मनाने में सफल रही और वे वापस आ गए। किस मजबूरी में आए और अब उनकी भूमिका क्या होगी, ये तो वे ही जानें।

Your Trust Our Passion...

FIVE STAR BUILD ESTATE PVT. LTD.

A Real Estate & Construction

27, Ist Floor, Diamond Plaza, Opp. Choudhary Hospital,
Hiran Magri, Sec. 4, Udaipur (Raj.) 313002
Email: devvardar@gmail.com,
Mob.: 98295-62167, Ph.: 0294-2461186 (R)

PRAMAN

Construction Pvt. Ltd.

Hemraj Vardar

Office: 9, Five Star Complex, Near Kumbha Nagar,
Hiran Magri, Sector No. 4, Udaipur-313001 (Raj.)
Telefax: 0294- (O) 2461648, (R) 2461186,
Mobile: 98299-48186
Email: pcpl.udaipur@gmail.com

Sister Concern:

D.V. CONSULTING STRUCTURAL ENGINEERS

EXPERT IN STRUCTURE DESIGN WITH ETABS, SAFE, SAP, STAAD

Email: dvardar@gmail.com

कांग्रेस के हाथ से निकले 'कमांडर'

-मोहन गौड़

12 नवंबर को छत्तीसगढ़ में वोटिंग होगी। यहां होने वाले चुनाव को लेकर सभी पार्टियां गंभीर हैं। सीएम रमन सिंह और पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी से अलग हटकर देखें तो तीन बड़े नेताओं अमित शाह, राहुल गांधी और मायावती के लिए ये चुनाव बहुत ज्यादा मायने रखते हैं। ये तीनों ही छत्तीसगढ़ में डेरा डाले बैठे हैं। यहां राहुल गांधी को पहला झटका मायावती ने दिया-अजीत जोगी की पार्टी से गठबंधन करके। दूसरा अमित शाह ने कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष रामदयाल उइके की घर (भाजपा में) वापसी से दिया। उइके फिलहाल कोरबा जिले की पाली-तानाखार विधानसभा सीट से विधायक हैं और ये उनकी चौथी पारी है। छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने 17 साल पहले उन्हें बीजेपी से उठाकर कांग्रेस में प्रतिष्ठापित किया था। तब 'राम' ने जोगी को 'लक्ष्मण' कहकर संबोधित किया था। लेकिन जोगी के कांग्रेस छोड़ने के बाद भी 'राम' कांग्रेस में बने रहे। अब उनकी भाजपा में घर वापसी के साथ ही कांग्रेस की मुसीबतें बढ़ गई हैं। बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह और रमन सिंह की मौजूदगी में उनकी घर वापसी ऐसी आम घटनाओं से बिलकुल अलग मानी जा रही है। उइके का हाथ से निकल जाना कांग्रेस के लिए बड़ा झटका है तो बीजेपी के लिए बड़ी उपलब्धि। 15 साल से सत्ता में रहने के बावजूद ये सीट बीजेपी के हाथ नहीं लग पा रही थी। अब किले की कौन कहे बीजेपी ने कमांडर को ही अपनी ओर मिला लिया है। 2013 में भी ये सीट बीजेपी की पहुंच से बाहर रही। रामदयाल उइके ने गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के उम्मीदवार को 19 हजार वोटों से हराया था-और बीजेपी का तीसरा नंबर उसके बाद रहा। छत्तीसगढ़ बनने से पहले रामदयाल उइके मध्य प्रदेश की मरवाही सीट से विधायक थे और अजीत जोगी के लिए ही उन्होंने सीट छोड़ी थी। वैसे उइके के कांग्रेस छोडने के पीछे एक कारण यह भी बताया जा रहा है कि राहुल गांधी के कार्यक्रम में उन्हें मंच पर जगह नहीं देने की टीस ने उनके अहम के घाव को नासूर बना दिया और कांग्रेस छोड़ने जाने मजबूर कर दिया। बीजेपी पहले से ही शिकार की तलाश में थी और मौका मिलते ही झपट पड़ी।

उइके की भाजपा में वापसी के मायने

कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष का पद छोड़ भाजपा में आए रामदयाल उइके जानते हैं कि कांग्रेस पार्टी छत्तीसगढ़ की 90 सीटों में किसे उम्मीदवार बना रही है। कांग्रेस की हर चुनावी रणनीति में वे शामिल रहे हैं। इस लिहाज से भाजपा ने रणनीतिक तौर पर एक बढ़त तो ले ली है। गौरतलब है कि उइके उन चंद नेताओं में हैं जो लगातार चार बार चुनाव जीत चुके हैं। माना जा रहा है कि गोंगपा (गोंडवाना गणतंत्र पार्टी) से कांग्रेस की बढ़ती नजदीकियों को देखते उनका मन उब गया था। भाजपा में शामिल होने के बाद उइके ने कहा 'मैं कांग्रेस में बिना पॉवर का कार्यकारी अध्यक्ष था। कार्यकारी अध्यक्ष होने के कारण प्रत्याशी चयन के लिए कांग्रेस चुनाव समिति की अंतिम बैठक में भी वे मौजूद थे। किस सीट पर सिंगल नाम है और कहां पैनल है इसे वे बखूबी जानते हैं। अब तक विपक्षी दल के टिकट वितरण के बाद अपने प्रत्याशी घोषित करने वाली भाजपा को पता चल गया है कि कौन, कहां से कांग्रेस प्रत्याशी होगा। ऐसे में भाजपा उनके काट ढूंढ़ रही है। जोगी के खिलाफ चुनाव मैदान में उन्हें उतारना भी भाजपा की रणनीति हो सकती है।

आसान हुई कांग्रेस-गोंगपा की राह

राजनीति के जानकार मान रहे हैं कि उइके ने पाली-तानाखार सीट बचाने के लिए ही भाजपा ज्वाइन की है। यहां से उन्हें टिकट भी मिल गया है। इधर, उनके जाने से कांग्रेस-गोंगपा के बीच गठबंधन की राह आसान हो गई है। गोंगपा से गठबंधन होने पर कांग्रेस को सोनहत, मनेंद्रगढ़, बैकुंठपुर, प्रेमनगर, प्रतापपुर, बिंद्रानवागढ़, कांकेर, सिहावा आदि सीटों पर फायदा हो सकता है। गोंगपा प्रमुख हीरासिंह मरकाम के मुताबिक दिल्ली में आदिवासी समुदाय की बैठक के बाद ही कांग्रेस आलाकमान से चर्चा होगी। गोंगपा अध्यक्ष मरकाम पिछले तीन चुनावों से तानाखार सीट पर से दूसरे नंबर पर रहे हैं। उइके की सहमति के अभाव में गोंगपा-कांग्रेस का गठबंधन असंभव था। यह भी माना रहा है कि जोगी कांग्रेस बनी तो कांग्रेस ने उइके को जोड़े रखने के लिए कार्यकारी अध्यक्ष बनाया। जोगी ने उइके को तानाखार से उतारा था। लेकिन कांग्रेस इस बार उन्हें मरवाही से उतारने वाली थी, जो राजनीतिक दृष्टि से घाटे का सौदा होता।

सत्ता से ज्यादा ज़रूरी है सीटें जीतना

छत्तीसगढ़ में विधानसभा की 90 सीटें हैं। 2013 में बीजेपी ने 49 जबकि कांग्रेस ने 39 सीटें जीती थी। पहली विधानसभा में अजीत जोगी के नेतृत्व में कांग्रेस ने 48 सीटें हासिल की थी और तब बीजेपी के खाते में 38 सीटें आई थी। तब से लेकर अब तक विपक्षी पार्टी के पास हर बार 37-39 विधायक रहे हैं। छत्तीसगढ़ में रमन सिंह चौथी पारी के लिए जी जान से जुटे हैं। सत्ता विरोधी फैक्टर से अलग से उन्हें जूझना ही है, फिर भी कांग्रेस इतने बड़े मौके का फायदा उठाती नहीं दिख रही। साल दर साल कांग्रेस लगातार कमजोर होती गई। नवसली हमले में भी कांग्रेस को अपने कई बड़े नेताओं से हाथ धोना पड़ा। कांग्रेस में तो पहले से ही कुछ सीडी को लेकर हड़कंप मचा हुआ है। कहा जा रहा है कि सीडी में कांग्रेस अध्यक्ष भूपेश बघेल से लेकर कांग्रेस के राज्य प्रभारी पीएल पुनिया तक के नाम हैं। दोनों की अलग अलग सीडी हैं। वैसे सीडी के बगैर छत्तीसगढ़ में चुनाव भी फीका सा लगता है, करीब-करीब वैसे ही जैसे देश के बाकी हिस्सों में बिना ईवीएम विवाद के चुनाव का खत्म हो जाना। ऐसे में देखना काफी रोमांचक होगा कि कमांडर की घर वापसी भाजपा को फायदा पहुंचाती है या कांग्रेस को। राजनीति के जानकारों का मानना है कि कांग्रेस को इससे कुछ भी फायदा नहीं बल्कि नुकसान ही होने वाला है।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

सुभाष चपलोत

2420446(O)
2485613(R)

चपलोत ट्रेडिंग कम्पनी

जनरल मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

तीज का चौक, धानमण्डी, उदयपुर, 313001

Happy Diwali

DHL

DHL EXPRESS INDIA PVT. LTD.

53, Panchwati, Udaipur, Tel. : 0294-2414388, Tele Fax : 0294-2414388
E-mail : savvyan2006@yahoo.co.in I savvyan@sancharnet.in

साईं समाधि के 18 अक्टूबर 2018 को पूरे हुए 100 साल

शिरडी में 'जनकुंभ'

साईं बाबा संस्थानम् और महाराष्ट्र सरकार ने महोत्सव पर 3,023.17 करोड़ से अधिक किए खर्च

– उमेश शर्मा

गरीबों और बेसहारों के सहारे शिरडी(महाराष्ट्र) वाले साईं बाबा का समाधि शताब्दी महोत्सव 17-19 अक्टूबर, 2018 को प्रधामंत्री नरेन्द्र मोदी के सानिध्य में भक्तिपरक विविध आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ। विजयादशमी पर एक करोड़ से अधिक भक्तों ने बाबा की आकर्षक और सौम्य छवि के दर्शन किए। यह 'जनकुंभ' जैसा अवसर था। प्रति बारहवें वर्ष चार तीर्थों हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में कुंभ के मेले लगते हैं। कुंभ आम तौर पर तीन-चार महीने की अवधि का एक आध्यात्मिक समागम होता है। लेकिन साईं महापरिनिर्वाण शताब्दी महोत्सव 1 अक्टूबर 2017 से आरंभ होकर करोड़ों श्रद्धालुओं की आवाजाही के साथ 19 अक्टूबर 2018 तक चला। वर्ष भर चले इस महोत्सव में दो करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का आना-जाना रहा। जिनमें विदेशों में बसने वाले भारतीय प्रवासी भी शामिल थे। पूरे वर्ष शिरडी में दूर-दूर तक जन सैलाब था। महाराष्ट्र सरकार और साईं ट्रस्ट ने जिस तरह से श्रद्धालुओं के दर्शन, आवास, भोजन, चिकित्सा, परिवहन आदि की व्यवस्था की, वह सराहनीय थीं। किसी को भी असुविधा का आभास नहीं हुआ। अकेले शिरडी-मंदिर ट्रस्ट ने ही दैनन्दिन 50 हजार से भी अधिक लोगों के सोने, खाने और स्नानादि का प्रबंध किया। इस पूरे साल रोजाना लगभग एक लाख लोगों का आवागमन हुआ। त्रिदिवसीय मुख्य समारोह के दौरान सभी स्थानीय 750 होटल्स और शिरडी साईं संस्थानाम् आवास गृह के सभी 1500 कमरे यात्रियों से भरे थे। शिरडी के बाशिन्दों ने एक सदी पूर्व न सिर्फ बाबा को देखा, बल्कि कैमरे से ली गई उनकी दुर्लभ तस्वीरें आज भी कुछ लोगों के पास मौजूद हैं। उनके सम्बन्ध में अलग-अलग किंवदन्तियां प्रचलित हैं। कुछ हिन्दू तो कुछ मुस्लिम धर्म से उनका सम्बन्ध जोड़ते हैं। साईं की प्रतिष्ठा किसी एक वर्ग या समुदाय में नहीं है, उन्होंने चमत्कारों और सेवा कार्यों से हर जाति-समुदाय को अपना मुरीद बनाया। उन्हें लोग ईश्वर का अवतार मानते थे किन्तु उन्होंने अपने मुंह से कभी ऐसा घोषित नहीं किया और न ही प्रकट करने की कोशिश की। कभी वे कहते 'रामजी भला करें' तो कभी उनके मुंह से निकलता 'अल्लाह मालिक'। यही वजह है कि वे हिन्दू-मुस्लिमों के प्रिय हैं। बाबा का असल नाम, पता, ठिकाना किसी को ज्ञात नहीं। उनका जन्म कोई 27 सितम्बर, 1830 तो कोई 28 सितम्बर 1835 तो कोई 1838 बताता है, पर इसके साक्ष्य के कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। सांई नाम उन्हें शिरडी आने पर ही मिला। सोलह वर्ष की अवस्था में एक बैरागी के रूप में इनका आगमन अहमदनगर जिले के शिरडी में हुआ। गांव से बाहर नीम के पेड़ के नीचे लोगों ने इन्हें हमेशा ध्यानस्थ देखा। लोग आश्चर्यचकित होते थे कि सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास का इस युवा पर कोई असर नहीं होता। दिन में किसी से न मिलना और रात में हिंसक जानवरों वाले जंगल में भटकते रहना ही इनकी दिनचर्या थी। उनकी मुलाकात प्राय: खण्डोबा मंदिर के पुजारी, म्हाल्सापति, अप्पा जोगले और एक महिला बाइजा से हुई जो उन्हें पुत्रवत प्रेम करने लगी थीं। साईं कुछ समय के लिए शिरडी छोड़कर चले गए, तब लोग दुखी भी हुए। करीब वर्ष भर बाद 1858 में ये वापस आए। इन्हें एक खण्डहर में रहने का स्थान मिला, जिसे इन्होंने द्वारिका माई नाम दिया और वहीं धुनी रमाई। 15 अक्टूबर 1918 को बाबा समाधिस्थ हुए। जिसकी उदी(विभूति) से असंख्य लोगों का उपचार किया और समस्याओं से छुटकारा दिलाया। लोग उनके चमत्कारों को देखकर दंग रह जाते थे। उनसे दुर्भावना रखने वाले उनका बुरा करने की कोशिश भी करते रहे पर हमेशा निष्फल रहे। बाबा कहते थे कि उनमें कोई शक्ति या चमत्कार की कुव्वत नहीं है। करने वाला

साईं की शिक्षा

- जाति, धर्म, समुदाय की व्यर्थ बातों में न पड़कर आपस में प्रेम व सद्भावना के साथ रहें, क्योंकि 'सबका मालिक एक है'।
- श्रद्धा, विश्वास और सबूरी(धैर्य) के साथ जीवन व्यतीत करें।
- सर्व धर्म सम्मान के साथ मानवता की सेवा करें।
- जाति और समाजगत भेदभाव को इन्सानों ने बनाया। ईश्वर की नजर में सब समान है।
- गरीबों और लाचारों की मदद करें, यही सबसे बड़ी पूजा है।
- जो पीड़ित और जरूरतमंद की सेवा करता है, ईश्वर स्वयं उसकी सहायता करते हैं।
- माता-पिता, बुजुर्ग और गुरुजन का सम्मान करें। इनके आशीर्वाद से हर मुश्किल आसान होती है।

'ऊपर बैठा मालिक है, मैं तो उसका छोटा सा सेवक मात्र हूँ'। साईं बाबा संस्थानम् के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे एवं उनकी टीम ने पूरे वर्ष चले साईं सच्चरित्र, अखंड पारायण पाठ, पालकी यात्रा, भजन कीर्तन, शोभायात्रा के आयोजनों को जिस तन्मयता से किया, उसकी सब ओर प्रशंसा है। मंदिर द्वारिका माई सहित सम्पूर्ण परिसर पर रोशनी की सजावट व साईं का श्रृंगार देखते ही बनता था। सांई संस्थानम् के सीईओ रूबल अग्रवाल के अनुसार 1922 में साईं बाबा मंदिर एक ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत हुआ था। तब ट्रस्ट की सालना आय 3200 रूपए थी, जो आज बढ़कर 371 करोड़ रूप हो गई है। साईं समाधि शताब्दी वर्ष के समापन के अंतिम तीन दिन साईं को करीब 6 करोड़ का चढ़ावा समर्पित हुआ।

साईं के अनमोल वचन

- जीवन तभी सार्थक होगा, जब ईश्वर में पूर्ण आस्था के साथ सद्भाव में जीना सीख जाओगे।
- जीवन कमलवत् रहना चाहिए। जो सूर्य के प्रकाश में खिल उठता है और कीचड़ से अप्रभावित रहता है।
- सभी कार्य विचार के परिणाम होते हैं, अतएव विचारों का बड़ा महत्व है।
- अध्यात्म ऐसा पथ है, जिस पर नकारात्मकता है ही नहीं।
- जीवन एक सपना है, गीत है, यज्ञ और प्यार है। इसका आनंद लो।
- दुनिया में नया-पुराना कुछ भी नहीं। सब कुछ हमेशा से रहा है और रहेगा।
- ब्रह्माण्ड को देखो और ईश्वरीय महिमा का मनन करो। सितारों को देखो, ये लाखों की संख्या में रात को आसमान में चमकते हुए एकता का संदेश देते हैं। ये ईश्वर के स्वभाव का अंग है।
- आप एक ऐसी दुनिया में रहते हैं, जो मिथ्या आदर्शों से भरा भ्रम के खेल का मैदान है। ऐसी दुनिया का हिस्सा न बनें, अर्थात् गुमराह न हों।
- प्रेम एक सकारात्मक और घावों को भरने वाली सबसे प्रभावी ऊर्जा है।
- वर्तमान में जीना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हर क्षण नए विचार और कर्म की प्रेरणा देता है।

मौत के 75 साल बाद ...आती है सुगंध

मॉस्को। मौत के 80 साल बाद भी रूस के बौद्ध भिक्षु का शरीर अभी भी जीवित व्यक्ति जैसा ही है। दाशी दोरजी इतिजेलाव की 1927 में मौत हुई थी। उनके शरीर को सुरक्षित रखने के लिए केमिकल लगाकर ममी भी नहीं बनाई गई थी। बावजूद इसके उनके शव को देखकर लगता है कि वह किसी जीवित इंसान का हो। त्वचा से लेकर बाल और नाखून तक सब जिंदा इंसान जैसे हैं। बताते हैं कि वह अपने अनुयाइयों के लिए एक नोट लिखकर गए थे। इसमें उन्होंने अपनी डेडबॉडी को कब्र से निकालने की तारीख लिखी थी। भिक्षु की बताई तारीख के मुताबिक मौत के 48 साल बाद 1955 में उनका शव कब्र से निकाला गया। तब भी उनकी बॉडी को कोई नुकसान नहीं हुआ था। इसके बाद साल 1973 में और फिर साल 2002 में उनका शव बाहर निकाला गया, लेकिन उनके शरीर को कोई नुकसान नहीं हुआ। जब वैज्ञानिकों को इसके बारे में शोध करने के लिए बुलाया गया, तो वे भी देखकर हैरान रह गए। उन्होंने कहा कि बॉडी को देखकर ऐसा लगता है कि उनकी मौत 36 घंटे पहले हुई हो। फेडरल सेंटर ऑफ फॉरेंसिक मेडिसिन के प्रोफेसर विक्टर ने कहा कि सालों की प्रैक्टिस में उन्होंने बिना प्रिजर्व किए कभी ऐसी बॉडी नहीं देखी।

बौद्ध भिक्षु का यह चमत्कारिक शव बुरतिया के इवोल्गिन बौद्ध मिनिस्ट्री में रखा गया है। ये बौद्ध भिक्षुओं के लिए पवित्रता का प्रतीक बनी हुई है। बौद्ध भिक्षु के जोड़ों में कड़कपन नहीं आया था। साथ ही हाथों और पैरों की कोशिकाएं भी जिंदा इंसान की तरह लचीली थीं। साथ ही शरीर से कोई खुशबू आ रही थी।

धन से हो भक्ति का श्रृंगार

समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे। उनमें से एक श्री लक्ष्मी थीं। इनसे जुड़ी कई कथाएं है। यदि कथाओं पर ध्यान न भी दें और सन्देश पर टिकें तो दीप पर्व पर एक सुन्दर दार्शनिक विचार हमारे हाथ लगेगा। कहते हैं समुद्र से प्रकट होने के बाद लक्ष्मी को यह स्वतन्त्रता दी गई कि वे जिसे चाहे पति के रूप में वरण करें। लक्ष्मी को पाने केलिये ऋषि-मुनियों और देवताओं तक ने प्रयास किए, लेकिन लक्ष्मी ने सबको नकार दिया। जब सब लक्ष्मी को पाने के लिए बेचैन थे, उस समय नारायण पीताम्बर ओढ़े निद्रा मग्न थे। लक्ष्मी ने विचार किया कि ये अवश्य अनूठा व्यक्तित्व है। यह विचार कर उन्होंने नारायण को वर लिया। नारायण पालनहार हैं, जबकि लक्ष्मी अर्जन, सृजन और विसर्जन की प्रतीक हैं। विसर्जन यानी निवेश। लक्ष्मी समझ गई कि मैं इनके सान्निध्य में सर्वाधिक सुरक्षित और सम्मानित रहूंगी। नारायण प्रतीक हैं धैर्य, प्रेम, दान, वैराग्य तथा प्रगतिशीलता के नारायण सो रहे थे। कहते हैं लक्ष्मी के लिये सबकी नींद उड़ जाती है और अधिक आ जाय तो भी नींद नहीं आती। अनिद्रा ऊब को पैदा करती है, और ऊब से अशान्ति का जन्म होता है। इसलिये लक्ष्मी के साथ गहरी निद्रा का अभ्यास भी किया जाय, ताकि धन से भक्ति का श्रृंगार हो न कि भक्ति खंडित हो।

- भगवान लाल शर्मा 'प्रेमी'

ठंड में रहें सावधान, नहीं सताएगी आंखों की एलर्जी

बदलते मौसम में कई बार आंखों में एलर्जी की समस्या बढ़ जाती है। ठंड के दिनों में तापमान में लगातार गिरावट आ रही है, साथ ही वातावरण में प्रदूषण का स्तर भी बढ़ रहा है। ऐसे में कई बार एलर्जी और परेशान करने वाले रूखेपन का अहसास होता है। इस मौसम में नाजुक आंखों को कैसे रखें स्वस्थ, बता रहीं हैं - **डॉ. अनिता शर्मा**

कैसे होती है एलर्जी

कंजटिक्रा आंखें की एक बेहद मुलायम और पारदर्शी त्वचा है, जो हमारी भीतरी आंख और बाहरी दुनिया के बीच एक पारदर्शी परदे का काम करती है। एलर्जी होने पर आमतौर पर आंखों की इसी बाहरी परत पर असर पड़ता है। इसके प्रभाव से आंखें लाल हो जाती हैं, उसने पानी निकलने लगता है और खुजली होने लगती है।

घर को एलर्जी से मुक्त रखें

आपको इन दिनों हवा में मौजूद प्रदूषण अथवा धूल-मिट्टी से एलर्जी है तो घर के दरवाजे और खिड़कियां बंद रखें, ताकि ये चीजें घर के अंदर न आएं। एलर्जी बढ़ाने वाले इन तत्वों से बचाव के लिए एयर कंडीशनर का इस्तेमाल करें। कमरे से कारपेट हटा दें, क्योंकि इनमें आंखों की एलर्जी बढ़ाने वाली धूल जमा हो सकती है। कंबल, बिस्तर आदि साफ रखें।

आई ड्रॉप का इस्तेमाल करें

ठंडी हवाएं और रूखा मौसम कई बार आंखों के रूखेपन की वजह बन जाते हैं। ऐसे में आंखों में सूजन और खुजलाहट होती है। आंखों में नमी बरकरार रखने के लिए डॉक्टर की सलाह से आई ड्रॉप का इस्तेमाल करें।

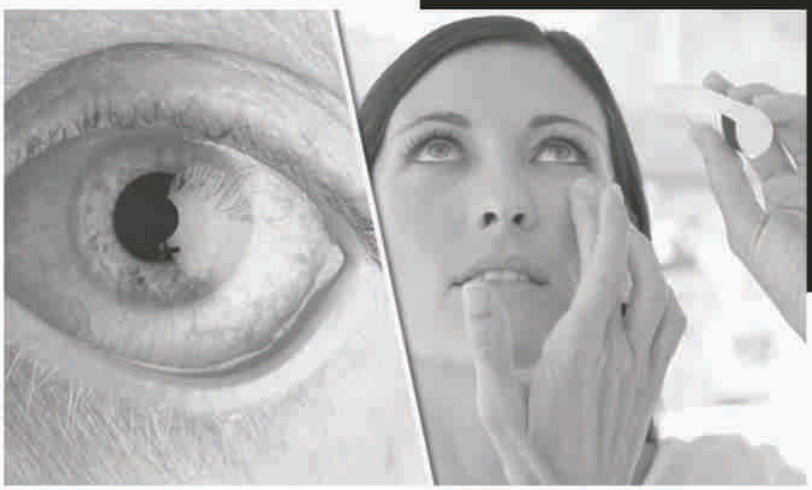

सुरक्षा के लिए चश्मा लगाएं

आसमान में बादल वाले दिन में सूरज की 80 प्रतिशत अल्ट्रा वायलेट किरणें हम तक पहुंचती हैं। ऐसे में यह धारणा गलत साबित होती है कि बादल छाए होने पर अल्ट्रा वॉयलेट किरणों का असर नहीं होता। यानी कोई भी मौसम हो आई-सन प्रोटेक्शन फैक्टर यानी ईएसपीएफ वाले चश्मे लगाएं।

धुएं और एग्जॉस्ट से बचें

ठंड में बाहर ठिठुरन का एहसास होता है, ऐसे में अक्सर लोग घर के अंदर ही धूम्रपान करते हैं। सिगरेट का धुआं आंखों को परेशान कर सकता है और एलर्जी की समस्या बढ़ा सकता है। अगर आपको धुंए से एलर्जी है तो अपने घर को 'स्मोक फ्री' जोन में तब्दील करें। डीजल वाली गाड़ियों से निकलने वाले धुएं से भी दूर रहें। इससे बचाव के लिए अपनी कार के शीशे बंद रखें।

सफाई और देखभाल

गंदे हाथों से आंखों को न छुएं। अपने हाथों को बार-बार धोएं और अपने आस-पास वालों को भी ऐसा करने के लिए कहें। तौलिये, रूमाल, आंखों के कॉस्मेटिक्स और अन्य चीज एक-दूसरे के साथ बांटने से बचें।

Happy Diwali

Phone :- 0294-2526882(0)

MAHESHWARI

CONSTRUCTION & COLONIZER

G 4-5, Krishna Plaza, Hazareshwar Colony,
Court Chouraha,Udaipur 313001 (Raj.)

आध्यात्मिकता का अर्थ है पूर्णता

– स्वामी हरिओम तीर्थ

लोग हमेशा अनुकूल परिस्थितियों में ही जीना चाहते हैं, लेकिन जब विपरीत हालात उत्पन्न होते हैं तो वे विचलित हो उठते हैं। जबकि जो यथार्थ में जीते हैं, उनके जीवन में हलचल न के बराबर होती है।

व्यक्ति का जीवन प्रतिपल एक नए वातावरण को जन्म देता है। उसमें नई-नई परिस्थितियां उत्पन्न होती रहती हैं, जिनका उसे पूर्वानुमान तक नहीं होता। कभी-कभी तो किसी घटना विशेष का प्रभाव व्यक्ति के मानस पटल पर इतना गहरा पड़ता है कि उसके जीवन की राह तक को बदल कर रख देता है, जैसा कि बुद्ध-महावीर-तुलसी और सूरदास जैसे महापुरुषों के जीवन चरित्रों को पढ़ने से पता चलता है। अनेक अन्य व्यक्तियों के उदाहरणों से भी ज्ञात होता है कि जरा-सी घटना से उनका जीवन बदल गया। इसका प्रमुख कारण है व्यक्ति का चित्त और उसके साथ जुड़े अनेक जन्मों के संचित संस्कारों का भंडार, जो व्यक्ति के चित्त पर उदय-अस्त हो-होकर उसे आंदोलित करता रहता है। संस्कार सुखद भी हो सकते हैं और दुखद भी अर्थात् पीड़ादायक भी। व्यक्ति का मन तो सदैव कश्मीर की वादियों के नज़ारों की ही कामना में डूबा रहता है, मरुस्थल की झुलसा देने वाली गर्म लपटों में भटकने की तो वह कभी कल्पना भी नहीं करता। वह जिस कल्पनालोक में रहता है, उसमें प्रतिकूलता नामक तो शब्द ही नहीं होता। जरा-सी भी प्रतिकूलता उसकी स्थिति में खलबली मचाने के लिए पर्याप्त है। जो साधक अपेन जीवन को सहजता से जीने की कला सीख जाता है, जिसके पांव कल्पनालोक की बजाय यथार्थ के धरातल पर चलने के अभ्यस्त हो जाते हैं, उसका मन भी फिर उड़ान भरना बंद कर देता है। फिर वहां कोई उठा-पटक नहीं होती। जैसे किसी वाहन की गति नियंत्रित हो तो दुर्घटना की संभावना भी क्षीण हो जाती है। मन की इसी अवस्था का नाम-जिस पर किसी भी घटना का कोई प्रभाव न पड़ता हो, उसे कुछ भी असामान्य प्रतीत न होता हो-सहजावस्था कहा जा सकता है। यह अवस्था प्राप्त की जा सकती है, जब हमारे जीवन जीने की गति, हमारी सोच की दिशा, सभी कुछ सहज हो जाए। उसमें कहीं भी जटिलता न रहे। हमारा मन जब जकड़न का अनुभव ही नहीं करेगा तो इधर-उधर भागेगा ही क्यों ? उसकी गति भी स्वाभाविक हो जाएगी, उसके लिए अतिरिक्त प्रयास भी हमें नहीं करना पड़ेगा। आध्यात्मिकता का दूसरा नाम है पूर्णता। वह व्यक्ति को कुछ छोड़ने के लिए आग्रह नहीं करती। जो भी कुछ अवांछनीय लगता है, वह स्वत: ही छूटता चला जाता है। किसी चीज को छोड़ने में व्यक्ति को संघर्ष करना पड़ता है, जबकि स्वत: ही छूट जाने में सहजता होती है। सहजता प्रकृति का गुण है, उसका स्वभाव है और संघर्ष किसी नदी के तेज बहाव के विपरीत दिशा में तैरने जैसा, जहां व्यक्ति के थक कर चूर हो जाने के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नहीं होता। सहजता में साधक के अन्दर की ऊर्जा का ह्रास नहीं होता, साधक में उत्साह बना रहता है। इसलिए मेरी यह मान्यता है कि जिस प्रक्रिया में तन और मन असुविधा का अनुभव करे, साधक को अपने साथ जबर्दस्ती करनी पड़े, उसे आध्यात्मिकता की दिशा में अनुकूल प्रयास नहीं कहा जा सकता। आपने देखा होगा, जब साधक के मन में कोई उथल-पुथल नहीं होती, शरीर भी पूरी तरह स्वस्थ होता है तो साधना में भी आलस्य नहीं आता, समय का भी भान नहीं रहता, किसी प्रकार की प्रतिकूलता भी अनुभव नहीं होती, मन भी प्रफुल्लित बना रहता है और साधक को अपने मन के साथ कुश्ती भी नहीं लड़नी पड़ती। इसे ही साधना की सहज अवस्था कहा जा सकता है। इसके विपरीत जब मन किसी विषय के चिंतन में डूबा हुआ हो या किसी कारण से शरीर थका हुआ हो अथवा रात्रि जागरण के कारण आलस्य भरा हुआ हो तो साधना में बैठते ही उच्चाटन की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। पूरा समय यों ही व्यतीत हो जाएगा।

साधना के लिए निश्चित किए गए समय की तो पूर्ति हो जाएगी, किन्तु ऐसी साधना से कोई लाभ नहीं होगा। साधना काल में साधक के चारों तरफ का वातावरण, शारीरिक तथा मानसिक अवस्था का साधनानुकूल होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक साधक को इसके लिए प्रयास करते रहना चाहिए। उपलब्ध सुविधा में जीवनयापन करने का अभ्यास करते रहने से चित्त की वृत्तियां भी सात्विक वातावरण में वृद्धि करने लग जाती हैं। धीरे-धीरे सभी कुछ साधनानुकूल बनता चला जाता है।

दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

पंजीयन संख्या 617 वाई

जय सहकार

स्थापना : 18-02-1959

KVSS UDAIPUR

उदयपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति लि.

प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)

संस्था के कार्य एक नजर में...

- रसायनिक खाद, उन्नत बीज, कीटनाशक औषधियों का विपणन एवं वितरण कृषि उपज मण्डी दुकान नं. 36 से।
- आढ़त पर कृषि उपज का क्रय-विक्रय कर उत्पादकों को उचित मूल्य दिलाना, नकद भुगतान की सुविधा देना एवं कृषि उपज की रहन पर ऋण ब्याज उपलब्ध कराना जिसमें सदस्यों को कृषि उपज का उचित मूल्य मिल सके।
- राज्य सरकार की नीति के अनुसार लक्षित वितरण प्रणाली के अन्तर्गत वस्तुएं वितरण करना।
- समर्थन मूल्य पर खाद्यान्नों की खरीद करना।
- दैनिक उपयोग की वस्तुओं का उचित मूल्य पर वितरण करना।
- पशुपालकों के लिये सस्ती दर पर राजफेड का पशु आहार वितरण।
- मिड-डे मील (पोषाहार) परिवहन।
- वाटर प्लान्ट (मेवाड़ जल धारा) के नाम से समृद्ध जल 20 लीटर जार में उपलब्ध कराना।
- उदयपुर डिवीजन की सहकारी संस्थाओं के माध्यम से बिनानी सीमेन्ट की बिक्री।

आशुतोष भट्ट
प्रशासक

हीरालाल मीणा
व्यवस्थापक

अनेठ ठिकानों-राजघरानों की नई पीढ़ी भी आ गई राजनीति के मैदान में, सियासी दलों को चाहिए नैया पार, इसलिए सिर-आंखों पर पूर्व राजपरिवार

- सुनील पंडित

देश में लोकतंत्र की स्थापना के साथ राजतंत्र भले ही विदा हो गया लेकिन विधानसभा हो या संसद, पूर्व राजपरिवारों की सरकार में भागीदारी कम नहीं है। येन-केन जीत हासिल करने की जोड़-तोड़ में भाजपा-कांग्रेस सहित अन्य दल अपनी सियासी नैया पार करवाने के लिए पूर्व राजघरानों को सिर-आंखों पर बिठाते रहे हैं। एमपी के सीएम शिवराज सिंह चौहान ने एक बार कहा था कि 'राजा-महाराजा हमेशा से अपनी ही प्रजा को लूटते आए हैं। वे सोचते हैं राज करना उन्हीं का जन्मसिद्ध अधिकार है लेकिन अब इन राजा-महाराजाओं की नहीं चलेगी।' तब शायद शिवराज सिंह ये भूल गए कि उनकी ही पार्टी में राजा-महाराजाओं की दखल अपेक्षाकृत अधिक है।

शिवराज के निशाने पर उनके गृह प्रदेश के राजा दिग्विजय सिंह और महाराजा ज्योतिरादित्य सिंधिया भले ही हों लेकिन राजा-महाराजाओं के राजनीति में आने का सिलसिला कोई आज शुरू नहीं हुआ है। राजनीति में ये कहा जाता है कि राजनेता चाहे किसी भी जाति का हो, पद के साथ कद बढ़ने से वह राजा ही हो जाता है। राजे-महाराजे इसी सूत्र को पकड़कर लोकतांत्रिक सत्ता के गलियारों में भी पैठ बनाने में कामयाब होते रहे। इतिहास गवाह है कि पद पाने की लालसा में उनकी निष्ठाएं भी बदलती रहीं। जयपुर राजघराने की दीया सिंह के पिता जयपुर के पूर्व महाराजा भवानी सिंह एक जमाने में कांग्रेस में थे। लेकिन 1989 के चुनाव में बीजेपी के गिरधारी लाल भार्गव से हार गए। उसके बाद भवानी सिंह ने कभी टिकट नहीं मांगा। लेकिन गिरधारी लाल भार्गव, 'जिसका कोई न पूछे हाल, उसके संग गिरधारीलाल' के नारे पर हर चुनाव जीतते रहे और जब तक जिये, जयपुर का संसद में प्रतिनिधित्व किया। वैसे दीया सिंह की दादी (सौतेली) राजमाता गायत्री देवी चक्रवर्ती के. राजगोपालाचारी के आग्रह पर राजनीति में आईं और जयपुर लोकसभा सीट से स्वतंत्र पार्टी की सांसद भी रहीं।

जयपुर में 2013 में वसुंधरा राजे की परिवर्तन यात्रा के समापन पर आयोजित रैली में गुजरात के तत्कालीन सीएम और पीएम पद के भाजपा के घोषित उम्मीदवार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राजकुमारी दीया ने 'कमल' थामा। राजस्थान की सीमा से सटे मध्यप्रदेश की बात करें तो यहां

जोधपुर राजघराना

बहन के लिए गजसिंह ने मांगे वोट

जोधपुर के पूर्व नरेश गजसिंह ने कभी चुनाव नहीं लड़ा। लेकिन उनके संबंध भाजपा नेताओं से अच्छे रहे। स्व.भैरोंसिंह शेखावत की सरकार के दौरान वे राजस्थान पर्यटन विकास निगम के चेयरमैन रहे। लोकसभा व विधानसभा में भाजपा प्रत्याशियों के पक्ष में प्रचार भी करते रहे, लेकिन साल, 2009 के लोकसभा चुनाव में उनकी बहन चंद्रेश कुमारी कांग्रेस से टिकट ले आई। राजपरिवार ने चन्द्रेश कुमारी के पक्ष में प्रचार किया। अपनी बहन के लिए गजसिंह ने लोगों के बीच जाकर वोट मांगे और चन्द्रेश कुमारी चुनाव जीतकर केन्द्र में मंत्री बनी। जोधपुर संभाग में जोधपुर के पूर्व राजपरिवार का काफी प्रभाव माना जाता है। जोधपुर के वर्तमान सांसद और केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को भी गजसिंह का आर्शीवाद प्राप्त है। खींवसर ठीकाने के गजेन्द्र सिंह को तीन बार विधानसभा का चुनाव जीतवाने में गजेन्द्र सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही। गजेन्द्र सिंह वर्तमान में वसुंधरा राजे सरकार में केबिनेट मंत्री हैं।

पूर्व नरेश गजसिंह

की राजनीति में भी राजघरानों का ग्लैमर और तिलिस्म बरकरार है। राज्य में सत्ता चाहे किसी की हो लेकिन राजघराने अपने रसूख का अहसास करवाते ही रहे हैं। इसी का नतीजा है कि वर्तमान लोकसभा, राज्यसभा और विधानसभाओं में पहुंचकर आज भी कई राव, राजा, ठिकानेदार प्रभावी भूमिका में हैं। इनमें ज्योतिरादित्य सिंधिया, दिग्विजय सिंह, राजस्थान की सीएम वसुंधरा राजे की बहन यशोधराराजे सिंधिया के अलावा धार से विधायक करण सिंह पंवार शामिल हैं। छतरपुर महाराज के परिवार के प्रतिनिधि के तौर पर विक्रमसिंह, नातीराजा राजनगर सीट से कांग्रेस विधायक हैं। इसके अलावा मानवेंद्र सिंह, नागेंद्र सिंह, कुंवर विजय शाह सहित कई पूर्व रियासतों से जुड़े लोग राजनीति में सक्रिय हैं।

अलवर राजघराना
कांग्रेस-भाजपा से संबंध

अलवर राजघराने के भंवर जितेन्द्र सिंह कांग्रेस में राष्ट्रीय सचिव होने के साथ ही पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी के सलाहकारों में खास माने जाते हैं। पिछली यूपीए सरकार में मंत्री रहे जितेन्द्र सिंह का अलवर जिले में खासा प्रभाव है। जिले के पांच से छह विधानसभा क्षेत्रों में जितेन्द्र सिंह के इशारे पर ही हार और जीत तय होती है। हालांकि पहली बार उनकी मां महेन्द्र कुमारी राजनीति में भाजपा की अंगुली पकड़कर उतरी। वे 1991 में भाजपा के टिकट पर चुनाव जीतीं। लेकिन 1998 में वे निर्दलीय और फिर 1999 में कांग्रेस के टिकट पर मैदान में उतरीं। दोनों ही बार हार का सामना करना पड़ा।

भंवर जितेन्द्र सिंह

जयपुर राजपरिवार
हर बार बदलता रहा पैंतरा

जयपुर राजघराने की पूर्व राजमाता गायत्री देवी स्वतंत्र पार्टी से सांसद रही। उनके पुत्र एवं जयपुर राजघराने के पूर्व महाराजा कर्नल भवानी सिंह 1989 में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव हार गए। उनकी बेटी दीया कुमारी वर्तमान में सवाई माधोपुर सीट से भाजपा विधायक है। 2013 के चुनावों से पहले दीया कुमारी ने भाजपा ज्वाइन की। हालांकि जयपुर में राजनैतिक रूप से पूर्व में सक्रिय नहीं रही लेकिन परिवार का जनता में ठीक-ठाक सा प्रभाव है।

दीया कुमारी

कोटा, उदयपुर और बीकानेर राजघराने की भी दखल

कोटा राजघराने के इज्येराज सिंह एक बार कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा का चुनाव जीत चुके है। बीकानेर राजघराने की सदस्य सिद्धी कुमारी वर्तमान में भाजपा विधायक हैं। बीकानेर राजपरिवार पहले स्वतंत्र पार्टी और फिर भाजपा के साथ रहा है। उदयपुर राजपरिवार के सदस्य महेन्द्र सिंह मेवाड़ एक बार कांग्रेस के टिकट पर सांसद रह चुके हैं।

धौलपुर राजघराना
15 साल से कमल निशान

धौलपुर राज परिवार की बहू वसुंधरा राजे दूसरी बार 2013 में प्रदेश की सीएम बनी। वे पांच बार सांसद रही। पिछले डेढ़ दशक से राजस्थान में भाजपा की कमान वसुंधरा राजे के हाथ में ही है। भाजपा चाहे सत्ता में हो या विपक्ष में, वसुंधरा राजे के इशारे पर ही पार्टी के निर्णय होते रहे हैं। वे झालरापाटन से तीन बार व धौलपुर से एक बार विधायक रह चुकी है। 2013 के चुनावों में वसुंधरा ने ही भाजपा को 163 सीटों की ऐतिहासिक जीत दिलाई। वाजपेयी सरकार में राज्यमंत्री भी रहीं। हैं। उनके बेटे दुष्यंत सिंह झालावाड़-बारां से भाजपा के सांसद हैं। उनका क्षेत्र की जनता से सीधा संपर्क और स्वयं का अनुशासन उनकी लोकप्रियता का एक बड़ा कारण है। इस परिवार की निष्ठा हमेशा भाजपा के साथ रही है।

वसुंधरा राजे

भरतपुर राजघराना
समय के साथ बदलाव

भाजपा के टिकट पर दो बार सांसद रहने वाले राजघराने के विश्वेंद्रसिंह अब कांग्रेस में हैं। वे जनता दल के टिकट पर 1989 और वर्ष 1999 व 2004 में भाजपा के टिकट पर भरतपुर से सांसद रहे। वे डीग-कुम्हेर विधानसभा सीट से वर्तमान में कांग्रेस पार्टी से विधायक हैं। संभाग की कई विधानसभा सीटों पर जीत-हार में उनका रोल काफी अहम रहता है। विश्वेंद्र सिंह जाट समाज के दमदार नेताओं में शामिल हैं। उनके चाचा स्व.मानसिंह भी विधायक रहे और अब उनकी बेटी कृष्णेन्द्र कौर दीपा वर्तमान में वसुंधरा राजे सरकार में पर्यटन मंत्री हैं। नदबई से विधायक होकर कुल तीन बार विधायक व एक बार भरतपुर से सांसद भी रह चुकी हैं।

विश्वेन्द्र सिंह

छोटे ठिकानों की चमकी किस्मत

भींडर (उदयपुर) ठिकाने के रणधीर सिंह वर्तमान में निर्दलीय विधायक हैं। शाहपुरा ठिकाने के राव राजेन्द्र सिंह भाजपा के टिकट पर तीन बार चुनाव जीत चुके और वर्तमान में विधानसभा में उपाध्यक्ष हैं। चौमू ठीकानेकी रूक्मणी कुमारी आगामी विधानसभा चुनाव लडने की तैयारी में जुट गई हैं।

मध्यप्रदेश : राजघरानों का 'रसूख' कायम

ज्योतिरादित्य सिंधिया

विदेश से एमबीए करने वाले ज्योतिरादित्य को ग्वालियर ही नही बल्कि राज्य के अन्य हिस्सों में भी समर्थक महाराज कहकर ही पुकारते हैं। सिंधिया राजघराने का असर एमपी से लेकर राजस्थान तक फैला हुआ है। पिता माधराव सिंधिया गांधी परिवार के काफी नजदीक थे। सांसद और केंद्र सरकार में मंत्री भी रहे। दादी विजयराजे जनसंघ और भाजपा की संस्थापक सदस्य थीं।

यशोधरा राजे सिंधिया

शिवराज सरकार में कैबिनेट मंत्री यशोधरा राजे सिंधिया राजस्थान की सीएम वसुंधरा राजे की बहन हैं। वे शिवपुरी से विधायक हैं। उनके भतीजे ज्योतिरादित्य सिंधिया कांग्रेस में हैं और इसी इलाके में राजनीति भी करते हैं। लेकिन दोनों कभी एक-दूसरे के खिलाफ प्रचार नही करते और न ही एक-दूसरे के खिलाफ सार्वजनिक रूप से कुछ बोलते हैं।

दिग्विजय सिंह

दस साल तक मध्यप्रदेश के सीएम रहे। कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह राबीगढ़ रियासत से जुड़े हैं। समर्थक उन्हें 'राजा साब' पुकारते हैं। दिग्विजय सिह सार्वजनिक रूप से परंपरा के मुताबिक ग्वालियर राजघराने के प्रति सम्मान दिखाने में कभी पीछे नहीं हटे। हालांकि सूबे की सियासत में ज्योतिरादित्य की राजनीतिक घेराबंदी में भी उन्होंने कसर नहीं छोड़ी है।

जयवर्धन सिंह

ये दिग्विजय सिंह के इकलौते बेटे हैं। पिता की परंपरागत सीट राबीगढ़ से वे दूसरी बार विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। दिग्विजय सिंह जैसे दिग्गज नेता से राजनीति का ककहरा सीखने वाले जयवर्धन सिंह को इस बार अपने पिता का उतना साथ नहीं मिल पाएगा क्योंकि सिंह ने उन्हें बता दिया है कि इस बार उनको अपने ही दम पर चुनाव लडना होगा।

अजय सिंह

अजय सिंह पूर्व सीएम, पंजाब के पूर्व राज्यपाल, कांग्रेस के पूर्व वाइस प्रेसीडेंट और केन्द्र सरकार में पूर्व केबिनेट मंत्री रहे अर्जुन सिंह के बेटे हैं। वे मंत्री और दो बार विधानसभा में नेता विपक्ष रहे हैं। उनका विंध्य में अच्छा खासा प्रभाव है। इनका संबंध चुरहट राजपरिवार से रहा है। उनके दादा राव शिवबहादुर सिंह भी मप्र सरकार में मंत्री थे।

पुष्पराज सिंह

रीवा राजघराने के पूर्व महाराज मार्तंड सिंह भी राजनीति में सक्रिय थे। उनके पुत्र पुष्पराज सिंह दिग्विजय सरकार में मंत्री रहे। पुष्पराज सिंह हाल ही में दोबारा कांग्रेस में लौटे हैं। पुष्पराज सिंह के पुत्र दिग्विजय सिंह वर्तमान में सिरमौर से भाजपा विधायक हैं। पुष्पराज सिंह ने 2006 में कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद उन्होंने समाजवादी पार्टी से चुनाव लड़ा लेकिन हार गए।

गायत्रीराजे पवार

देवास से पवार राजघराने से ताल्लुक रखने वाली गायत्री राजे पवार वर्तमान में विधायक हैं। देवास विधानसभा उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी के रूप में उन्होंने जीत हासिल की थी। वे पति महाराज तुकोजीराव पवार की विरासत को आगे बढ़ा रही हैं। तुकोजीराव लंबे समय तक प्रदेश की सियासत में सक्रिय रहे।

दीपावली पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

आँखों के सभी रोगों की जाँच, ईलाज, भर्ती एवं ऑपरेशन की सम्पूर्ण व्यवस्था

डॉ. आत्रेय नेत्र चिकित्सालय

आँखों के सभी रोगों की जाँच, उपचार एवं ऑपरेशन
डॉ. आत्रेय नेत्र चिकित्सालय

फेको मशीन द्वारा मोतियाबिंद का बिना टाँके वाला ऑपरेशन

19-20, टाउनहॉल लिंक रोड, कॉर्पोरेशन बैंक के पास, उदयपुर फोन :- 2561600, 9829041330

With Best Complements

0294-2412377

NEW
SANTOSH DINING HALL

1st Floor of Santosh Dal-Bati,
Surajpole, Udaipur-313001

Dal-Bati, Chapati, Rice,
Gujarati Food & Pure
Rajasthani Vegetable Food etc.

सामाजिक क्रान्ति एवं स्त्री शिक्षा के अग्रदूत

ज्योतिराव फूले

-रेवाशंकर माली

यह सच है कि कुछ व्यक्ति अपने लिए नहीं दूसरों के लिये जीते हैं। उनका मन मस्तिष्क हमेशा समाज हित के कार्यों के लिए समर्पित होता है और वे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये विपरीत परिस्थितियों में भी कठोर श्रम साध्य करते हैं एवं उसमें सफल होने तक प्रयास करते रहते हैं। महाराष्ट्र की संघर्ष एवं श्रमशीलता की उर्वरा भूमि पर छत्रपति शिवाजी जैसे राष्ट्र नायक एवं समर्थ गुरु रामदास, तुकाराम जैसे महान संत पैदा हुए। इसी पावन भूमि पर प्रसिद्ध समाज सुधारक ज्योतिराव फूले का जन्म 11 अप्रेल 1827 को पूना में हुआ। ज्योतिबा फुले की शिक्षा-दीक्षा पुणे के स्कॉटिश मिशन स्कूल में हुई। उस समय देश में अंग्रेजों का साम्राज्य था। ज्योतिराव फुले के जन्म के समय भी जातिवाद, छुआछूत, रुढ़िवाद, अज्ञानता, अशिक्षा, सामाजिक भेदभाव चरम पर था।

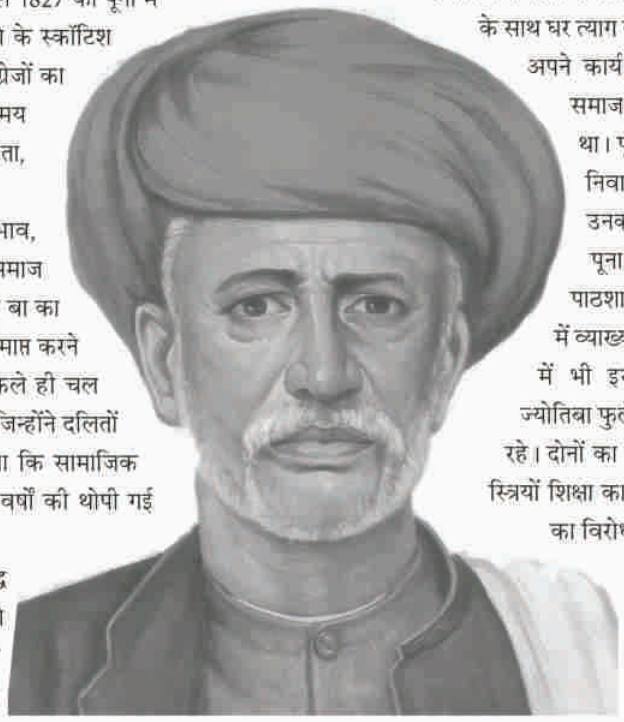

भारतीय समाज में भेदभाव, छुआछूत, अमीरी-गरीबी का अंतर तथा समाज में शूद्रों एवं स्त्रियों की दशा देखकर ज्योति बा का हृदय द्रविभूत हुआ और इन बुराइयों को समाप्त करने का संकल्प लेकर इस कठिन पथ पर अकेले ही चल पड़े। ज्योतिराव फुले ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने दलितों में आत्म सम्मान जगाया और उन्हें बताया कि सामाजिक गुलामी वंशानुगत नहीं होती। यह हजारों वर्षों की थोपी गई मानसिक दासत्व का प्रतीक है।

देश में सबसे पहले महात्मा बुद्ध ने इन वर्गों में सुधार का प्रयास किया और वो इसमें सफल भी हुए परन्तु उनके बाद इस ओर पूर्ण समर्पणता से प्रयास महात्मा ज्योति फूले ने ही किया। उन्होंने कहा इस असमानता को उखाड़ फेंकने के लिये शिक्षा का दरवाजा खोलना पड़ेगा। उन्होंने स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान दिया। उनका मानना था कि यदि महिलाएं शिक्षित होंगी तो बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सतीप्रथा, कन्या वध जैसी बुराइयों से छुटकारा स्वतः मिल जाएगा। इसके लिए सबसे पहले अपनी पत्नी सावित्रीबाई को लिखना-पढ़ना सिखाया, बाद में उन्हें बालिकाओं को लिखना-पढ़ना सिखाने की जिम्मेदारी दी। इस कार्य के लिए ज्योतिबा ने सन् 1851 में पूना के बुधवार पेठ में सर्वप्रथम कन्या शाला की स्थापना की। सावित्रीबाई फुले जब पढ़ाने जाती, लोग उन्हें उलाहने देते, फब्तियाँ कसते। परन्तु उन्होंने किसी की परवाह नहीं की और अपने कार्य को तल्लीनता से किया। इस प्रकार उन्हें भारत में पहली महिला शिक्षिका बनने का गौरव प्राप्त हुआ। ज्योति बा फुले ने अस्पृश्य जाति के बालकों के लिये एक पाठशाला भी खोली। अस्पृश्य लोगों के साथ भेदभाव चरम पर था। उनको पीने का पानी भी सरलता से उपलब्ध नहीं था। साफ पानी के अभाव में वे बीमारियों से घिरे थे। यह देखकर ज्योति बा का हृदय द्रविभूत हो उठा। उच्च वर्ग के लोग उन्हें अपने कुओं से या होजों से पानी नहीं भरने देते थे। ज्योति बा ने किसी आलोचना की परवाह किए बिना अपने घर का होज सन् 1849 में अस्पृश्यों के लिये खोल दिया।

ज्योतिबा सन् 1876 से 1882 तक पूना नगरपालिका के सदस्य रहे। उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर अस्पृश्य जातियों को पानी की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिये स्वच्छ पानी के हौज बनवाए। पत्नी के साथ घर त्याग कर महारों की बस्ती में रहने लगे तथा अपने कार्य को और तीव्रता से आगे बढ़ाया। समाज द्वारा बहिष्कृत होने का उन्हें भय नहीं था। पूना के पेठ जूनागंज में ज्योति बा का निवास था और पूना में ही बेताल पेठ में उनकी पुस्तकों की दुकान थी।

पूना के पेठ जूनागंज में शूद्रातिशूद्रों की पाठशाला में स्वामी दयानन्द ने जुलाई 1875 में व्याख्यान दिया था। उस समय समाचार पत्रों में भी इसकी काफी प्रतिक्रियाएं हुई थी। ज्योतिबा फुले भी स्वामी दयानंद जी के सम्पर्क में रहे। दोनों का एक ही उद्देश्य था समाज सुधार एवं स्त्रियों शिक्षा का प्रसार व रुढ़िवाद तथा अंधविश्वासों का विरोध। ज्योतिबा फुले लोकमान्य तिलक एवं आगरकर के भी सम्पर्क में थे। तिलक अपने अखबार 'मराठा' और 'केसरी' में अंग्रेजों के अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते थे। इसलिये उन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। जब जेल से 1882 में छुटे तो ज्योतिबा ने गाजे बाजे के साथ लोकमान्य तिलक का स्वागत किया।

सन् 1888 में महारानी विक्टोरिया के पुत्र ड्यूक ऑफ कनाट भारत आए तो पूना में भी उनका सम्मान हुआ। उस समारोह में ज्योतिबा भी सम्मिलित हुए। उन्हें भी दो मिनट बोलने का मौका मिला। सन् 1888 में दलित एवं शोषित वर्ग के लोगों ने पूना के कोलाबाड़ा नामक क्षेत्र में विशाल सभा आयोजित कर ज्योतिबा फुले को सम्मानित किया और महात्मा के पद पर जनता द्वारा विभूषित किया गया।

महात्मा ज्योतिबा फुले का महाप्रयाण 28 नवम्बर 1890 को हुआ। उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए महात्मा गांधी ने कहा 'वे सच्चे महात्मा थे'। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा 'महात्मा फुले बुद्ध और कबीर के समान धर्म सुधारकों की पंक्ति में आदरपूर्वक प्रतिष्ठित किये जायेंगे।'

दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं

स्वर्गीय श्री पटेल रामलाल जी काटका

Kuber Lal Dangi
9413771495

E-mail Id
patel3341@gmail.com

PATEL FILLING STATION

Dealer : HINDUSTAN PETROLEUM CORPORATION LTD.

Zamar Kotada Road, Eklingpura, Udaipur (Raj.)
Ph.:- 0294-6999991

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

Ghanshyam Dangi
9660963341

Dinesh Dangi
8233782359

Shree Ram Weigh Bridge

100 Ton Capacity Full Computerized

Zamar Kotada Road, Eklingpura, Udaipur (Raj.) 313001
Email :- shreeramweighbridge@yahoo.com

आवश्यकता है जिताऊ नेता की

चुनावी मौसम के दस्तक देते ही राजनीति के दल-दल में बुलबुले उठने लगे हैं। पार्टियों में खलबली मची है। जीत के दावों के साथ सरकार बनाने की जुगत में लगी है। यह जुगत कामयाब हो इसके लिए जिताऊ उम्मीदवारों की खोज का क्रम जारी है। जो जीता वही सिकंदर और जब सिकन्दर बनेगा तो स्वाभाविक है वह सरकार के अन्दर बैठने की जुगत भी करेगा।

डॉ. देवेन्द्र इन्द्रेश

मतदाता चुनाव के दिनों में ऊंट बन जाता है और ऊँट किस करवट बैठेगा यह पता लगाना राजनीति के बड़े से बड़े तुर्रम खाँ के लिए भी मुश्किल है। फिर भी हाँडी में दाल पकाने की कोशिश जारी है। दाल पकेगी या नहीं, यह ऊपर वाले पर निर्भर है।

जहाँ जनता 'जनार्दन' हो वहाँ जिताऊ होने का दावा व्यर्थ है। पार्टियों के आकाओं की चिन्ता वाजिब है। सभी को जिताऊ नेता ही मिल जाए कैसे संभव है? पर भाई घोड़ी पर बिना चढ़े बारात भी कैसे निकले? खोजने से तो भगवान भी मिल जाते हैं, यह तो नेता हैं और ऐसे नेता जिनकी लार सत्ता का स्वाद चखने के लिए निरंतर टपक रही है। जिस ढंग से नेता टिकिट प्राप्ति के लिए ऐड़ी से चोटी तक का जोर लगा रहे हैं, उन्हें देख कर तो ऐसा लगता है कि बस वही जिताऊ है और जीत कर सरकार बनवा सकता है। फिर दिमाग की बत्ती इस प्रश्न से रोशन हो उठती है कि यदि सभी जिताऊ हैं तो हराऊ नेता कैसा होता है? खैर, हमें इससे क्या लेना-देना। जो जीता वह लाख का, वरना ख़ाक का। हर पार्टी ने शर्त रख दी है कि टिकिट उसी को मिलेगा जो जिताऊ होगा।

देश में लोकतंत्र की रक्षा के नाम पर अनेकानेक पार्टियाँ प्रतिबद्ध हैं और मौजूदा सरकार जिस ढंग से लोकतंत्र की रक्षा कर रही हैं, सर्व विदित है। ऐसे में टिकिट के याचक पार्टियों को आश्वस्त कर रहे हैं कि हमें उम्मीदवार बनाओ हम जिताऊ हैं। वोटर हमारे अपने और हमारी मुट्ठी में हैं। वे हमें जिता कर ही दम लेंगे। जैसे आपश्री पार्टी की जीत का आश्वासन जनता को दे रहे हैं, वैसे ही हम भी आपको अपने जिताऊ होने का वचन दे रहे हैं। आका जी, हमारे वोटर जो बहुत अधिक संख्या में हैं, हम से कह रहे हैं कि नेता जी आप चुनाव में खड़े तो हो जाइए। हम आपको जरूर जिताएँगे और सिद्ध कर देंगे कि आप ही जिताऊ नेता हैं। आप टिकिट तो दीजिए प्रभु। हम निश्चित ही जीतेंगे अगर कदाचित हार भी गए तो कुछ दिन मुख-दर्शन नहीं देंगे। इस समय पार्टियों के ये आका 'कदाचित्' की रिस्क नहीं ले सकते। उन्होंने तय कर लिया है कि अंग-वस्त्र पर भले ही धब्बे हों, हड्डियों में दम न हो, हर एक कदम पर सांस फूलती हो, किन्तु हर हाल में जिताऊ होना चाहिए, उसी को पार्टी का टिकिट दे देंगे। जलाऊ लकड़ी की बाजार में जो माँग होती है ठीक वैसे ही जिताऊ नेता की है।

सभी टिकिटार्थी दु:खी हैं। इतने जिताऊ नेता कहाँ मिलेंगे। फिर भी गिड़गिड़ा रहे हैं। हर तरह से समझा रहे हैं, लेकिन पार्टी के आका टस से मस नहीं हो रहे। वे तो एक ही रट लगाए हुए हैं कि हमें जिताऊ नेता चाहिए। पार्टी के वफादार पुराने कार्यकर्त्ता आश्वस्त से हैं कि उन्होंने जिन्दगी भर पार्टी की दरी-जाजम बिछायी है, और वे आका की नजरों में जिताऊ भी हैं, इसलिए उनको तो पार्टी का टिकिट अवश्य मिलेगा। लेकिन आकाओं का ऐसा रूख देखकर उनको भी भारी मशक्कत करनी पड़ रही है।

अपराधी प्रवृत्ति के नेता जो अब तक अपनी दबंगई से पार्टी के जिताऊ नेता बने थे, सरकार के एक कानूनी शिकंजे ने उनके मंसूबों पर पानी फेर दिया है। इस कानूनी शिकंजे ने तो पार्टियों के आकाओं को संकट में डाल दिया है। इस समय उनकी स्थिति साँप-छछूंदर सी है। टिकिट दें तो आफत ना दें तो आफत। फिर भी रट यही है कि जिताऊ नेता चाहिए।

इस राजनीतिक चुनावी दंगल में एक ऐसा वर्ग भी ताल ठोक रहा है, जिसने असंतुष्ट होकर पार्टी छोड़ दी है। वे अपनी अलग खिचड़ी पका रहे हैं। जिनके माँ-बाप नहीं होते, वे स्वयं अपने भाग्य निर्माता होते हैं। पार्टी आलाकमान इनको हराऊ नेता मान कर इनका परित्याग कर देते हैं। ऐसे नेताओं को निर्दलीय करार दिया जाता है। जिनका काम चुनाव में जीतना कम पार्टी को हराना अधिक होता है। सौभाग्य से यदि निर्दलीय जीत जाते हैं तो वे बहुत महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। वे हर उस पार्टी के खेवनहार बन जाते हैं, जिसकी नैया चुनाव की नदी में हिचकोले खाती डगमगाती है। तब इनके ही सहारे पार्टी की नैया पार लग जाती है। पार्टी को जिताने में इनकी भूमिका उस फेविकोल की तरह है जो पार्टी की नैया में छेद होने पर उसे पाटने का काम करती है और पार्टी डूबने से बच जाती है। इस राहत कार्य से वे और उनकी भावी पीढ़ियां तक उपकृत हो जाती है। हालांकि यह राहत टैम्परेरी होती है। वे चाहें जब पाटे गए छेद को पुन: पारदर्शी बना सकते हैं। इसलिए पार्टियां 'जिताऊ' की ही तलाश करती हैं।

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, उमरड़ा
मल्टी सुपरस्पेशियलिटी सुविधाएँ
डॉ. अनुराग पटेरिया
न्यूरो सर्जन
डॉ. विकास गुप्ता
युरोलोजिस्ट
डॉ. प्रवीण झंवर
पिडियाट्रिक सर्जन
डॉ. एम.पी. अग्रवाल
प्लास्टिक सर्जन
डॉ. सुभाब्राता दास
सर्जिकल ऑंकोलोजिस्ट
डॉ. बकुल गुप्ता
नेफ्रोलोजिस्ट
प्लास्टिक सर्जरी
+ बर्न (जलने का ईलाज)
+ कैंसर (चेहरे व त्वचा के)
+ कटी नस-नाड़ी जोड़ना
+ चेहरे के फ्रेक्चर एवं चोटें
+ जन्मजात विकृतियों के ऑपरेशन
+ कटी अंगुलियों को पुन: जोड़ना
+ जलने से उत्पन्न विकृतियां
+ बेड सोर, कीलोइड्स
+ फेशियल नर्व पेरेलिसिस
कैंसर सर्जरी
+ सॉफ्ट टिश्यू कैन्सर सर्जरी
+ जीआई एवं जीयू कैन्सर एण्डोस्कॉपी
+ दुरबीन द्वारा कैन्सर सर्जरी
+ ब्रेस्ट व गले की कैन्सर सर्जरी
+ फ्रोजेन सेक्शन
+ सिर, गर्दन व नाक का कैन्सर इत्यादि
किडनी रोग
+ हाइटिक हिमोडायलिसस मशीन्स एवं मोनिटरिंग सिस्टम
+ आई.सी.यू. डायलिसिस (SLED)
+ डाइबिटिक एवं उच्च रक्तचाप
+ डायलिसिस केथेटर-परम केथेटर
यूरिन में प्रोटीन व रक्त
+ बच्चों में किडनी रोग
+ किडनी बायोप्सी
+ नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम
न्यूरो सर्जरी
+ ऐपीलेप्सी क्लिनिक (मिर्गी)
+ मुवमेंट डिसऑर्डर क्लिनिक
+ लकवा (Stroke)
+ मिर्गी व झंझानाहट + माईग्रेन
+ एक्सिडेन्ट व ट्रोमा
+ मस्तिष्क व स्पाईनल कोर्ड गांठ
+ ऐन्निरीयुस्म क्लिपिंग सर्जरी
+ सिर व रीढ़ की हड्डी के ऑपरेशन
+ हाईड्रोसीफेलस-सिर में पानी भरना
युरोलोजी
+ प्रोस्टेट की गांठ व गुर्दे की पथरी
+ यूरेटर की पथरी
+ पेशाब की थैली का दूरबीन से ऑपरेशन
+ मूत्र की नली की सकुड़न
+ शिशु की मूत्रनली के वाल्व का दूरबीन से ऑपरेशन
+ शिशु के लिंग संबंधी विकृति ईलाज
+ पुरूष जननांग संबंधित विकारों का उपचार लेजर मशीन द्वारा
+ RIRS, Ultra Mini PCNL, Mini PCNL ThLVP (थुलियम 200 होलियम 35 W) अत्याधुनिक मशीन द्वारा
एच.आई.वी. व हेपेटाइटिस के मरीजो के लिए डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध है ।
राजस्थान सरकार से अधिकृत संभाग का एकमात्र ART Center, ICTC, DOTS
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना
लाभार्थियों को अन्तरंग ईलाज हेतु कैशलेस सुविधा
लाभार्थियों को अन्तरंग ईलाज हेतु कैशलेस सुविधा
प्रत्येक परिवार को प्रतिवर्ष चिन्हित सामान्य बीमारियों हेतु रु. 30 हजार और चिन्हित गंभीर बीमारियों हेतु 3 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा कवर
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का निःशुल्क उपचार
राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK) योजना
(राष्ट्रीय अंधता नियंत्रण कार्यक्रम)
एम्बुलेंस सेवा
24/7 EMERGENCY SERVICE
आपातकालीन सुविधाएँ उपलब्ध
ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU
अम्बुआ रोड़ , उमरडा, उदयपुर
फोन नं.: 0294-3010000, Website : www.pacificmedicalsciences.ac.in

समाज की विसंगतियों पर फोकस - 'आधा आकाश'

चार कहानी संग्रह और दो उपन्यास के प्रकाशन के पश्चात् नीलप्रभा भारद्वाज का पहला काव्य संग्रह 'आधा आकाश' पिछले वर्ष बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित होकर पाठकों के हाथ पहुंचा। जुलाई-18 के अन्तिम सप्ताह में मुझे भी यह मिला। अपनी व्यथा-कथा कहती सी नील प्रभाजी के इस संग्रह की छोटी-बड़ी 84 कविताएं पठनीय ही नहीं, विचारणीय भी हैं। रूढ़ परम्पराओं और मूढ़ मान्यताओं पर प्रहार करती '**अम्मा! तुम तो समझो/बाबुल! लोथ में ना बदलो/याद करो..... तीसरे जन्म में/चौथे जन्म में ?/पानी से भरी बाल्टी में..../तुमने ही मुझे डुबा दिया...../कितने-कितने जन्मों की कहानियां कहूंगी ?**' ऐसी कई कविताएं हैं जो उनके खट्टे-मीठे अनुभवों के साथ समाज के सच्चे-झूठे चेहरों की असलियत को निचोड़ लेती है। **फड़फड़ाहट चिड़िया की...../देखी ना गई/उनसे...../पंख कतर डाले...../चीखें सही ना गई/उनसे/×××बाज़/बाज़ था/झपट्टामार था/पंख फड़फड़ाकर उड़ गया/किसने देखा/किसने जाना/चिड़िया का मरना/**

नीलप्रभा भारद्वाज

प्रकाशक
बोधि प्रकाशन, जयपुर
मूल्य : 150/-
पृष्ठ संख्या : 140

घनी संवेदना और सुन्दर भावों से भरपूर संग्रह की कविताएं सहज ही दिल की गहराइयों को स्पर्श करती सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ अपनी प्रतिबद्धता की छाप तो छोड़ती ही हैं, पाठक को भी हालात बदलने के लिए साथ चलने का आमंत्रण देती हैं। **/झपझपाती दीप सी...../बुझ जाऊंगी/छोड़कर तन/मन की व्यथा/नहीं खोज पाओगे/मेरा पता/गुमशुदा पन्नों में खो जाऊंगी/**' आधा आकाश' की कविताओं में कवियत्री की जीवन बोलता और संघर्ष करता नज़र आता है। **करुणा और संवेदना/की बात करते हो...../मनुष्य को बचाए रखने/की बात करते हो/**जैसे शब्द चित्र बहुत सुन्दर बन पड़े हैं। नीलप्रभा जी की कविताओं के यूं तो कई आयाम हैं, किन्तु शोषित, पीड़ित और प्रताड़ित नारी को वाणी देने की ज़िद अधिक है। साहित्य जगत में निश्चय ही इस कविता संग्रह का स्वागत होगा।

-विष्णु शर्मा हितैषी

ई-दस्तावेज

'डिजिलॉकर' में सुरक्षित करें दस्तावेज

डिजिटल इंडिया अभियान के तहत शुरू हुए 'डिजिलॉकर' के इस्तेमाल से आपको न सिर्फ कागजी दस्तावेज साथ रखने की झंझट से छुटकारा मिलेगा, बल्कि आपके मूल दस्तावेज खोने या चोरी होने का डर भी नहीं रहेगा। इतना ही नहीं, यहां रखे आपके ई-दस्तावेज पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे।

1.35 - करोड़ डिजिलॉकर अब तक देशभर में खोले जा चुके हैं।

1.85 - करोड़ दस्तावेज अब तक यहां अपलोड किए गए

21 से 30 वर्ष - उम्र वाले यूजर ने सबसे ज्यादा डिजिलॉकर बनाए हैं देश में

आठ गुना ज्यादा डिजिलॉकर पुरुषों के हैं महिला यूजर के मुकाबले

सरकार ने भी हाल में जारी अपने आदेश में कहा है कि आरटीओ या पुलिस विभाग को जांच के समय ई-दस्तावेज स्वीकार करने होंगे।

क्या है डिजिलॉकर : इस सुविधा का लाभ वेबसाइट और मोबाइल एप के माध्यम से उठाया जा सकता है। इसमें सभी डाटा क्लाउड के जरिये स्टोर होते हैं। इस एप में आप अपने दस्तावेजों की स्कैन कॉपी पीडीएफ, जेपीईजी या पीएनजी फॉर्मेट में अपलोड कर सकते हैं। इन दस्तावेजों का ई-साइन के जरिये सेल्फ अटेस्टेशन भी किया जा सकता है।

ये दस्तावेज रख सकेंगे : डिजिलॉकर में आप पैन कार्ड, शैक्षिक प्रमाण पत्र, जाति और जन्म प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, गाड़ी का रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट आदि रख सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम-2000 के तहत डिजिलॉकर में उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड को मूल दस्तावेजों के समान माना जाएगा। डिजिटल लॉकर में दस्तावेज बैंक खाते या नेट बैंकिंग की तरह ही सुरक्षित होंगे। आपका यूजर आईडी आधार और मोबाइल नंबर से लिंक होता है। जब भी आप लॉकर में काम करेंगे तो पहले आपके मोबाइल पर ओटीपी आएगा। इसे डालने के बाद ही डिजिलॉकर को खोला जा सकेगा।

ऐसे बनाएं डिजिलॉकर

- डिजिलॉकर डॉट गव डॉट इन की वेबसाइट या गूगल प्ले स्टोर से एप डाउनलोड करें।
- वेबसाइट पर जाने के बाद अपना मोबाइल नंबर डालकर 'कन्टीन्यू' पर क्लिक करें।
- आपके मोबाइल पर ओटीपी आएगा इसको डालकर अपना खाता वेरिफाई करें।
- यूजरनेम और पासवर्ड बनाएं और साइन अप पर क्लिक कर आधार नंबर डालें और इसे साइन करें। आधार नंबर से वेरिफाई करने पर ओटीपी आएगा उसे डाल आगे बढ़ें।
- अब डिजिलॉकर में आपका अकाउंट खुलने का मैसेज आएगा। इसे बाद में खोलने के लिए अपना यूजरनेम और पासवर्ड याद कर लें।

-अविनाश

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबू जो आपके जीवन में लाये खुशहाली

250 Products Available

चेतक घोड़ा CHETAK HORSE ®

ISO 9001:2008 CERTIFIED

Archana®
Agarbatti

EXPORT QUALITY Since 1947 AGARBATTI

Registered Office :
ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES

N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899

E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

सम्पदा के सम्मान और समृद्धि की कामना : दीपावली

दीपोत्सव पर कामना करें कि राष्ट्रीय एकता का स्वर्णदीप युगों-युगों तक अखंड बना रहे। हम ग्रहण कर सकें, नन्हें से दीप की कोमल-सी बाती का गहरा-सा संदेश कि बस अंधकार को पराजित करना है और नैतिकता के सौम्य उजास से भर उठना है।

– देवर्षि कलानाथ शास्त्री

दीपावली का उत्सव इस देश में लगभग दो हजार वर्षों से किसी न किसी रूप में मनाया जाता है किन्तु यह निश्चित है कि इसका जो स्वरूप आज है वह 500 वर्षों से अधिक पुराना नहीं है। वह उद्योग-व्यापार और वाणिज्य-व्यवसाय की उन्नति के परिणामस्वरूप उद्विकसित एक सामाजिक उत्सव का चित्र प्रस्तुत करता है, जिसके साथ लक्ष्मी पूजा का धार्मिक कृत्य भी जुड़ा हुआ है। दीपावली के उत्सव की प्राचीनता पर विद्वानों में बहुत विचार मंथन हुआ है। अधिकांश प्राच्य और पाश्चात्य विद्वानों ने प्राचीन संस्कृति के सोतों को खोजकर यह मत व्यक्त किया है कि भारत के सांस्कृतिक इतिहास में दीपावली का वह स्वरूप जो आज है अर्थात् लक्ष्मी पूजा और दीपक जलाने के सम्मिलित उत्सव का स्वरूप, वह बहुत प्राचीन नहीं है क्योंकि हमारे पुरातन ग्रंथों, रामायण, महाभारत, कालिदास आदि के काव्यों तथा नाटकों में जहां अन्य उत्सवों के वर्णन मिलते हैं, वहां दीपावली का उल्लेख नहीं मिलता। कुछ भारतीय विद्वानों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि दीपों का उत्सव तो भारत में बहुत प्राचीन काल से मनाया जाता रहा है पर वह उस दिन नहीं मनाया जाता था जिस दिन आज दीपावली मनाई जाती है। दीपोत्सव जैसे किसी लोकोत्सव के संकेत कुछ प्राकृत कविताओं में पाए जाते हैं किन्तु वह कब मनाया जाता था। इसका निर्धारण नहीं हो पाया है। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व लिखे गए वात्स्यायन के कामसूत्र में 'यक्षरात्रि' के रूप में कार्तिक की अमावस्या को मनाए जाने वाले एक उत्सव का उल्लेख मिलता है, किन्तु उस समय इस दिन लक्ष्मीपूजा या दीपोत्सव का उल्लेख न होकर क्रीड़ाओं और गाने-बजाने का ही संकेत है।

कब से प्रारंभ?

दीपावली के उत्सव की दो विशेषताएं हैं - एक तो दीपों की जगमगाहट द्वारा प्रकाशपर्व का रूप, दूसरे लक्ष्मी की पूजा। बहुत प्राचीनकाल में शरद पूर्णिमा को अथवा कार्तिक मास के किसी दिन दीपों का उत्सव भी मनाया जाता था और आश्विन आदि मासों में विभिन्न प्रदेशों में लक्ष्मी की पूजा भी की जाती थी किन्तु ये दोनों कार्य किसी एक दिन होते हों, इसका निश्चय नहीं हो पाया है। किसी समय इन दोनों आयोजनों को मिलाकर एक महत्वपूर्ण उत्सव की अवधारणा की गई होगी, जो आज तक दीपावली के नाम से चला आ रहा है, ऐसा विद्वानों का अनुमान है।

शोध विद्वानों की मान्यता है कि शरद पूर्णिमा के दिन कौमुदी महोत्सव विशाल पैमाने पर दीपोत्सव के रूप में मनाया जाता था। इसका उल्लेख चाणक्य और चंद्रगुप्त के समय भी मिलता है। चंद्रगुप्त ने दीपोत्सव नदी और नावों पर मनाने का आदेश दिया था। किन्तु सुरक्षा की दृष्टि से चाणक्य ने उस पर प्रतिबंध लगा दिया था। इस पर साहित्य में बहुत कुछ लिखा गया है। दूसरी ओर, कार्तिक अमावस्या की यक्ष संस्कृति में जो उन्नत आर्थिक समृद्धि और जीवन के स्वस्थ उपभोग की संस्कृति थी, यक्ष रात्रि नाम का उत्सव गाने-बजाने के साथ मनाया जाता था। इन दोनों उत्सवों के अतिरिक्त आश्विन मास में लक्ष्मी पूजा की परंपरा भी थी। इन तीनों परम्पराओं को एक दिन अर्थात् कार्तिक की अमावस्या को समन्वित करके दीपावली के इस विशाल उत्सव का उद्विकास हुआ। गहराई से देखा जाए तो यह उत्सव आर्थिक और वाणिज्यिक समृद्धि का प्रतीक है। इसमें की जाने वाली लक्ष्मी पूजा ने भी कुछ शताब्दियों से धन की देवी लक्ष्मी की पूजा का रूप ले लिया है अर्थात् इस दिन लक्ष्मी के उस पक्ष का सम्मान किया जाता है जो समृद्धि, व्यवसाय, प्रगति और आर्थिक प्रगति का प्रतीक है।

यह उल्लेखनीय है कि 15वीं सदी से पूर्व के धर्म-ग्रंथों और अभिलेखों में इसका वह रूप वर्णित नहीं मिलता जो आज है। आज इसके तीन आयाम उभरकर आते हैं। एक तो लक्ष्मी पूजा की परम्परा, दूसरे मकानों की सफाई, लिपाई-पुताई, दीपों की पंक्तियों से सजाने की परम्परा और तीसरी पटाखों और आतिशबाजी की परम्परा। इनमें तीनों ही परम्पराओं का दीपावली के दिन एक साथ वर्णन केवल परवर्ती ग्रंथों में ही मिलता है। 15वीं सदी के आस-पास लिखे गए विशाल संदर्भ ग्रंथ 'आकाश भैरव कल्प' में दीपोत्सव, लक्ष्मी पूजा आदि परम्पराओं का उल्लेख है। भविष्य पुराण में इस उत्सव का विधान ठीक उसी प्रकार मिलता है, जैसे आज मनाया जाता है। उसके वर्णन से स्पष्ट होता है कि उस समय यह उत्सव वाणिज्य, व्यवसाय के प्रमुख उत्सव के रूप में स्थापित हो गया था। उसमें लक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा आदि का जो विधान है उससे भी धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी और धनपति कुबेर का पूजन कर आर्थिक समृद्धि मांगने की परम्परा स्पष्ट होती है। भविष्य पुराण में लिखा है कि - वस्त्रैः पुष्पैः शोभितज्याः क्रयविक्रयभूमयः। अर्थात् दीपावली के दिन क्रय-विक्रय के केन्द्रों को सुंदर वस्त्रों और पुष्पों से सजाया जाए। दीप पंक्तियां सभी सार्वजनिक स्थानों पर रखी जाने का भी विधान मिलता है। इसका आशय यही है कि हर व्यक्ति अपने घर में तो हर दिन उजाला करता है, ऐसे स्थानों पर जो सार्वजनिक हैं, सबके हैं, और किसी के भी नहीं, उनमें भी उजाला करना एक धार्मिक कर्त्तव्य के रूप में वहित कर दिया जाए ताकि इस सामाजिक दायित्व को धार्मिक मान्यता मिल जाए।

भविष्य पुराण का आज जो रूप है उसे विद्वानों द्वारा बहुत प्राचीन नहीं माना जाता। किन्तु प्राचीन ग्रंथों में भी दीपावली के दूसरे दिन अन्नकूट अथवा गोवर्धन पूजा की जो परम्परा है, वह धन्योत्सव के रूप में वर्णित मिलती है। भागवत में उल्लेख है कि श्रीकृष्ण ने कृषि की समृद्धि के प्रतीकभूत गोवर्धन-पर्वत की पूजा धान्यों और पकवानों के साथ करके कृषि प्रधान समाज व्यवस्था का महत्व स्थापित किया था। यह घटना दीपावली के दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को हुई थी इसलिए उस दिन गोवर्धन पूजा और अन्नकूट आज तक मनाया जाता है। इसके दूसरे दिन प्राचीन व्यापारिक संस्थानों में दवात-कलम की पूजा की जाती थी। बहीखाते बदले जाते थे और नये साल के कार्य शुरू हो जाते थे। जैन परम्परा में यह महोत्सव महावीर निर्वाण होने के कारण महत्वपूर्ण है। दीपावली महावीर का निर्वाण दिवस है और महावीर निर्वाण संवत इसके दूसरे दिन आरंभ होता है। बहीखातों के बदले जाने और दवात-कलम की पूजा की परम्परा इसी जैन परम्परा का विकास प्रतीत होती है क्योंकि जैन समाज इस देश का प्रमुख वाणिज्यिक वर्ग रहा है। रियासतों में कोषाध्यक्ष, लेखाकार, मुनीम आदि महत्वपूर्ण पदों पर जैन समाज के विशिष्ट व्यक्तियों की देन प्रसिद्ध है।

इस प्रकार दीपावली के उत्सव के साथ जो धार्मिक अथवा सामाजिक परम्पराएं आज जुड़ी मिलती हैं वे सब इस देश की वाणिज्यिक संपदा के सम्मान और आर्थिक समृद्धि की कामना का संकेत देती हैं। समुद्र मंथन से लक्ष्मी उत्पत्ति, लक्ष्मी को समुद्र की पुत्री मानना, समुद्र से अनेक रत्नों का उद्भव, यह सब क्या इस बात के प्रमाण नहीं है कि सदियों से हमारे यहां समुद्रपारीय वाणिज्य के कारण लक्ष्मी अर्थात् समृद्धि का आना सुविदित था? समुद्र पार किए बिना क्या कभी लक्ष्मी प्राप्त हो सकती है? यह तो हुई प्रतीकों की बात किन्तु यह भी प्रमाणित हो चुका है कि हमारे यहां सदियों पूर्व से ही पोत निर्माण की अर्थात् पानी के जहाज बनाने की कला उच्च स्तर पर रही है, जहाज से विभिन्न द्वीपों में जाकर व्यापार करने की कथाएं पुराणों में ही नहीं, जैन कथाओं और प्राचीन अभिलेखों में भी मिलती हैं। उसी समुद्र पुत्री लक्ष्मी की पूजा का यह पर्व पूरे देश के लिए उल्लास और आलोक का पर्व बन गया। दीपक और पटाखे उसी उल्लास और आलोक के प्रतीक हैं। इस देश में जिस प्रकार स्वच्छंद और उन्मुक्त आमोद-प्रमोद को होली में स्थान दिया गया है, ज्ञान और विज्ञान की साधना को श्रावणी में स्थान दिया गया है, शस्त्रों की पूजा और शक्ति के आराध्य को विजयदशमी के पर्व पर सम्मान दिया गया है उसी प्रकार भौतिक समृद्धि और आर्थिक उन्नति की प्रतीक, लक्ष्मी की पूजा दीपावली को विहित करके सांसारिक समृद्धि को भी महत्व दिया गया है क्योंकि यह देश केवल साधु-संतों का ही नहीं, विद्वानों और विचारकों का भी, व्यापारियों और व्यवसायियों का भी है, सेवाधर्मियों, श्रमिकों और कृषकों का भी है।

खुला रखें ज्योतित द्वार

एक बार कार्तिक मास की अमावस को लक्ष्मीजी भ्रमण पर निकलीं। चारों ओर अंधकार व्याप्त था। वे रास्ता भूल गईं। उन्होंने निश्चय किया कि रात्रि वे मृत्युलोक में गुजार लेंगी और सूर्योदय के पश्चात् बैकुण्ठधाम लौट जाएंगी किन्तु उन्होंने पाया कि सभी लोग अपने-अपने घरों में द्वार बंदकर सो रहे हैं। तभी अंधकार के उस साम्राज्य में उन्हें एक द्वार खुला दिखा जिसमें एक दीपक की लौ टिमटिमा रही थी। वे उस प्रकाश की ओर चल दीं। वहां उन्होंने एक वृद्ध महिला को चरखा चलाते देखा। रात्रि विश्राम की अनुमति मांग कर वे उस बुढ़िया की कुटिया में रुकीं। वृद्ध महिला लक्ष्मीदेवी को बिस्तर प्रदान कर पुनः अपने कार्य में व्यस्त हो गईं। चरखा चलाते-चलाते वृद्धा की आंख लग गई। दूसरे दिन उठने पर उसने पाया कि अतिथि महिला जा चुकी है किन्तु कुटिया के स्थान पर महल खड़ा था। चारों ओर धन-धान्य, रत्न-जेवरात बिखरे हुए थे। कथा की फलश्रुति यह है कि मां लक्ष्मीदेवी जैसी उस वृद्ध पर प्रसन्न हुईं वैसी सब पर हों। और, तभी से कार्तिक अमावस की रात को दीप जलाने की प्रथा चल पड़ी। लोग द्वार खोलकर लक्ष्मीदेवी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे। किन्तु मानव समाज यह तथ्य नहीं समझ सका कि मात्र दीप जलाने और द्वार खोलने से महालक्ष्मी घर में प्रवेश नहीं करेंगी। बल्कि सारी रात परिश्रम करने वाली वृद्धा की तरह कर्म करने पर और अंधेरी राहों पर भटक जाने वाले पथिकों के लिए दीपकों का प्रकाश फैलाने पर घरों में लक्ष्मी विश्राम करेंगी। ध्यान दिया जाए कि वे विश्राम करेंगी, निवास नहीं। क्योंकि लक्ष्मी का दूसरा नाम ही चंचला है। अर्थात् अस्थिर रहना उनकी प्रकृति है। वे सतत् चलायमान हैं क्योंकि थम जाने पर प्रगति रुक जाएगी।

आह मेहंदी! वाह मेहंदी!

आप अपने हाथों पर दीपावली पर सिर्फ खूबसूरत मेहंदी ही नहीं लगाना चाहेंगी, बल्कि यह भी चाहेंगी कि वो खूब गहरी रचे। कुछ आसान टिप्स की मदद से इस काम को बनाएं संभव

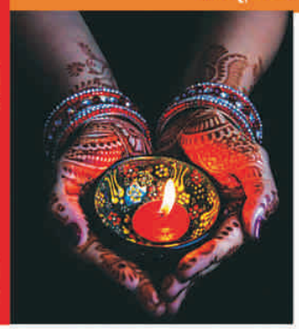

- यह ध्यान रखें कि हाथों में मेहंदी लगाने से पहले आपके हाथ पूरी तरह साफ और सूखे हों।
- मेहंदी को जल्द-से-जल्द हटाने की गलती न करें। मेहंदी सूख जाने के बाद उसके ऊपर नीबू और चीनी के मिश्रण का घोल लगाएं। पर इस मिश्रण को बहुत ज्यादा नहीं लगाएं, वरना मेहंदी का रंग डीप ब्राउन हो जाएगा।
- लोहे के तवे को गर्म करें और उसके ऊपर लौंग के कुछ दाने रखें। लौंग के दाने से जो धुआं निकलेगा उससे आपने मेहंदी वाले हाथों की सिकाई करें।
- मेहंदी के सूखने और उसे हटाने के बाद अब आप अपने हाथों को जितना ज्यादा गर्म रखेंगी, आपकी मेहंदी उतनी ही ज्यादा गाढ़ी रचेगी।
- इसके लिए मेहंदी हटाने के बाद हाथों को बिल्कुल भी गीला नहीं करें। मेहंदी लगाने के बाद हाथों को गर्म रखने के लिए अपनी हथेलियों पर थोड़ा-सा विक्स लगा लें। इससे हाथ गर्म रहेंगे और सुबह तक मेहंदी गाढ़ी हो जाएगी।
- मेहंदी सुखाने के लिए ड्रायर का इस्तेमाल नहीं करें। ड्रायर के इस्तेमाल से डिजाइन खराब हो जाएगी। - **निष्ठा शर्मा**

ज्योति पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाइट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाइट वाशिंग पाउडर 4 कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com

www.aadharproducts.in

गंगा में समाये 'गंगापुत्र'

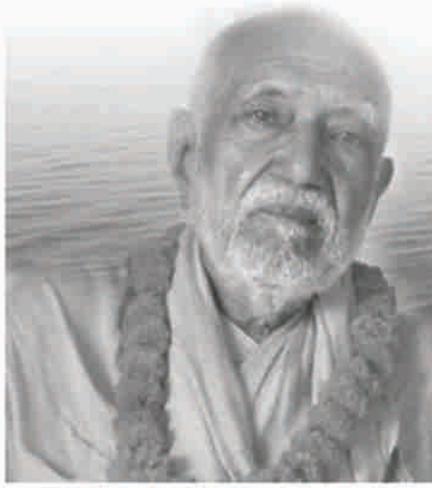

-नंदकिशोर

बात 2012 के साल की है। तब नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री हुआ करते थे। मार्च का महीना था और गंगा की सफाई को लेकर प्रोफेसर गुरुदास अग्रवाल नाम के एक शख्स अनशन पर बैठे थे। उस वक्त मोदी ने प्रोफेसर साहब के स्वास्थ्य की चिंता पर गंभीरता दिखाई और एक ट्वीट में कहा कि उन्हें उम्मीद है कि केंद्र सरकार गंगा को बचाने के लिए एक्शन लेगी। लेकिन मजे की बात ये है कि पीएम बनने के बाद नरेंद्र मादी को जीडी अग्रवाल ने 4 पत्र लिखे लेकिन एक का भी जवाब नहीं आया। गंगा बचाने के लिए 111 दिनों से अनशन पर बैठे अग्रवाल का 11 अक्टूबर को निधन हो गया। दुनिया उन्हें स्वामी ज्ञान स्वरूप सानंद के नाम से भी जानती थी। 22 जून से वे चार मांगों को लेकर अनशन कर रहे थे। वे आईआईटी के प्रोफेसर थे और उनको बेस्ट टीचर का अवार्ड भी मिला था। विदेश में पढ़ाई के बाद जब वे स्वदेश आए तो गंगा की सफाई के अभियान में जुट गए। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने संन्यास ले लिया और पूरा जीवन गंगा को निर्मल बनाने के लिए समर्पित कर दिया। अपनी चार मांगों में वे चाहते थे कि केंद्र सरकार गंगा सुरक्षा एक्ट 2012 बनाए। गंगा पर वर्तमान एवं प्रस्तावित सभी जल विद्युत परियोजनाओं तथा बालू की खुदाई पर तुरंत पूरी तरह से रोक लगाई जाएं। गंगा की सुरक्षा के लिए और गंगा से जुड़े मुद्दों को देखने के लिए एक काउंसिल बनाई जाए। इन्हीं मांगों को लेकर हरिद्वार के मातृ सदन में लगातार अनशन करते रहे। करीब एक महीने पहले ही प्रोफेसर अग्रवाल ने कह दिया था कि अगर सरकार मांगे नहीं मानती है, तो वे नवरात्र शुरू होने के साथ ही 'जल' भी त्याग देंगे। सरकार ने बात नहीं मानी और उन्होंने 10 अक्टूबर से पानी भी त्याग दिया। इसके बाद हरिद्वार प्रशासन की नींद खुली और उसने प्रोफेसर को मातृ सदन से उठाकर ऋषिकेश के एम्स में भर्ती करवा दिया। 11 अक्टूबर को उनकी तबीयत बिगडने लगी और जब तक उन्हें ऋषिकेष से दिल्ली लाया जाता उससे पहले ही दोपहर 2 बजे के करीब उनकी मौत हो गई। अफसोस यह है कि 111 दिनों की भूख हड़ताल के बाद भी उन मुद्दों की तरफ वे लोगों का ध्यान नहीं खींच सके, जिसके लिए उन्होंने भूख हड़ताल की थी। यह हमारी असंवेदनशीलता ही कही जाएगी। क्या कभी गंगा साफ हो पाएगी या फिर हम झूठ-मूठ का **'नमामि गंगे'** और **'गंगे! तव दर्शनात् मुक्ति'** ही रटते रह जाएंगे। याद रहे कि साल 2014 में पीएम नरेंद्र मोदी ने गंगा की सफाई को लेकर वादा किया था। वाराणसी जाने पर उन्होंने कहा था– 'गंगा मां ने मुझे बुलाया है।' लोगों का विश्वास था कि मोदी सरकार कुछ करे या न करे लेकिन गंगा की सफाई करके ही दम लेगी। इसके लिए सरकार ने 'नमामि गंगे' नाम से बहुप्रचारित योजना की शुरुआत की और करोड़ों रुपए को बहाया। लेकिन बावजूद इसके गंगा की स्थिति में खास बदलाव नहीं दिखाई दिया। 1985 में पहली बार गंगा एक्शन प्लान बनाया गया। 15 वर्ष में इस पर 901 करोड़ रुपए खर्च हुए। 1993 में कुछ और नदियों को मिलाकर गंगा एक्शन

'नमामि गंगे' से क्या मिला गंगा को

गंगा की सफाई और संरक्षण के लिए पीएम नरेंद्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट 'नमामी गंगे परियोजना' को चलते हुए अब एक साल से भी ज्यादा हो चुका है.। इस परियोजना के लिए केन्द्र सरकार ने 2037 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया था और गंगा के घाटों के निर्माण और सौंदर्यीकरण के लिए अलग से 100 करोड़ का बजट निर्धारित किया। इस काम को केदारनाथ, हरिद्वार, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना और दिल्ली में कराना तय किया गया। पिछले तीन दशक में नदी की सफाई और संरक्षण पर जितना धन खर्च किया गया इस परियोजना में उससे चार गुना ज्यादा बजट को मंजूरी दी गई। ये परियोजना कागजों में इतनी आकर्षक दिखाई देती हैं कि अगर सही तरीके से इसका क्रियान्वयन किया जाए तो गंगा का पानी काफी हद तक साफ हो सकता है, लेकिन एक साल हो गया पर इस परियोजना पर कोई काम नहीं किया जा सका। 1986 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 462 करोड़ रुपए की लागत वाले 'गंगा एक्शन प्लान' को मंजूरी दी थी। इस पर 987 करोड़ रुपए खर्च करने के बावजूद ये प्लान फेल हो गया। 2009 में नेशनल गंगा रिवर बेसिन अथॉरिटी ने इस पर फिर से काम करना शुरु किया। 2014 तक गंगा की सफाई पर करीब 910.57 करोड़ रुपए खर्च किए। कुल मिलाकर अब तक गंगा की सफाई पर 1900 करोड़ रुपए खर्च किए जा चुके हैं। ये परियोजनाएं इसलिए असफल हुईं क्योंकि नीतियां तैयार करने वाले लोग तकनीकी के आगे कुछ देख नहीं सके। उन्हें लगा कि इस परेशानी से निपटने के लिए सूरज ट्रीटमेंट प्लान जैसे प्रदूषण नियंत्रण उपकरण लगाना ही काफी होगा। 1985 से 'नमामी गंगे परियोजना' के शुरु होने तक सरकार देश के शहरी इलाकों में इस तरह के ट्रीटमेंट प्लान चला रही थी, पर ये कोई कमाल नहीं कर सके।

प्लान-2 शुरू किया गया। राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना बनी। 1995 से लेकर 2014 तक 4168 करोड़ रुपए खर्च करने का दावा है, लेकिन यदि सच में यह काम हुआ है तो वह गया कहां। एक शोध के मुताबिक गंगा में 2 करोड़ 90 लाख लीटर प्रदूषित कचरा गिर रहा है। उत्तर प्रदेश में होने वाली 12 फीसदी बीमारियों की वजह गंगा का प्रदूषित जल है। वही राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण की अब तक कुल तीन बैठकें हो चुकी हैं। लेकिन इन तीन बैठकों में से केवल एक बैठक की ही अध्यक्षता पीएम नरेंद्र मोदी ने की। सच तो यह है कि सत्ता के सौदागरों के लिए गंगा केवल एक चुनावी जुमला बनकर रह गई है। असल में गंगा की चिंता किसी को नहीं है? वरना 111 दिन के अनशन पर बैठे 'गंगापुत्र' गंगा में नहीं समाते।

घटने की बजाय बढ़ता जा रहा प्रदूषण

2014 में मोदी सरकार ने गंगा नदी की सफाई के लिए महत्वाकांक्षी 'नमामि गंगे' मिशन की शुरुआत की। लेकिन गंगा नदी का प्रदूषण घटने की बजाय बढ़ता गया। एक संसदीय समिति, जिसने गंगा सफाई के लिए सरकार के प्रयासों का मूल्यांकन किया था उसने बताया कि गंगा सफाई के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम पर्याप्त नहीं हैं। इस रिपोर्ट के मुताबिक, मौजूदा स्थिति ये बताती है कि सीवर परियोजनाओं से संबंधित कार्यक्रमों को राज्य द्वारा सही तरीके से लागू नहीं किया गया जो सरकार का गैरजिम्मेदाराना रवैया दर्शाता है। संसदीय समिति के अलावा नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने भी गंगा सफाई को लेकर सरकार की कोशिश को अपर्याप्त बताया था। सवाल ये उठता है कि एक महान पर्यावरणविद खोने के बाद क्या सरकार जागेगी? या उसे और भी मौतों का इंतजार रहेगा? इससे पहले 1998 में निगमानंद के साथ स्वामी गोकुलानंद ने भी क्रेशर व खनन माफिया के खिलाफ अनशन शुरू किया था और दोनों को मौत हो गई। इसके अलावा केंद्रीय जल संसाधन और गंगा सफाई मामलों की मंत्री रहीं उमा भारती ने भी गंगा की स्वच्छता को लेकर कभी भीष्म प्रतिज्ञा की थी कि 'गंगा साफ नहीं करवा पाई तो प्राण त्याग दूंगी।' गंगा के प्रति उमा के जज्बे को देखने के बाद ही पीएम मोदी ने उन्हें गंगा का प्रोजेक्ट सौंपा था। लेकिन पीएम मोदी को बाद में लगा कि एक संन्यासिन गंगा के मोक्ष के लिए सारी बाधाओं के बावजूद प्रयास करेगी। बाद में मंत्रियों के रिपोर्ट कार्ड का फीडबैक उमा के खिलाफ ही गया। जिसकी वजह से मोदी मंत्रिमंडल के तीसरे विस्तार से पहले जब मंत्रियों के इस्तीफे की छड़ी लगी तो उसमें एक बड़ा नाम उमा का भी था।

आईआईटी कानपुर में रहे प्रोफेसर

गंगा की स्वच्छता के लिए अपनी जान देने वाले प्रोफेसर अग्रवाल उर्फ स्वामी ज्ञान स्वरूप सानंद का जन्म पश्चिमी यूपी के मुजफ्फरनगर में जन्म हुआ। उन्होंने आईआईटी रुड़की से इंजीनियरिंग की। हालांकि जब उन्होंने इंजीनियरिंग की थी, तो उस वक्त रुड़की को आईआईटी का दर्जा नहीं मिला था और उसे यूनिवर्सिटी ऑफ रुड़की कहा जाता था। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद वे बतौर डिजाइन इंजीनियर उत्तर प्रदेश के सिंचाई विभाग में अपनी नौकरी करने लगे। लेकिन उन पर पर्यावरण बचाने की धुन सवार थी। इसके लिए उन्होंने बर्कले की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया से पर्यावरण इंजीनियरिंग में पीएचडी की डिग्री हासिल की और उसके बाद पर्यावरण को लेकर कई किताबें लिखीं। पीएचडी के बाद उन्होंने सिंचाई विभाग की नौकरी छोड़ दी और कानपुर आईआईटी में पर्यावरण इंजीनियरिंग के प्रोफेसर हो गए। पर्यावरण को बचाने की मुहिम में जुटे प्रोफेसर अग्रवाल को 1979-80 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने केंद्र की प्रदूषण नियंत्रण ईकाई सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड का पहला सदस्य सचिव नियुक्त किया था।

आईआईटी छोड़ी, कंपनी बनाई और फिर लिया संन्यास

प्रोफेसर अग्रवाल ने 17 साल आईआईटी में पढ़ाया और फिर नौकरी छोड़ दी। वे कानपुर आईआईटी में पढ़ाते रहे, लेकिन इसकी वजह से उनका पर्यावरण बचाने का मकसद पूरा नहीं हो पा रहा था। इसलिए उन्होंने आईआईटी छोड़ दी और कुछ छात्रों की मदद से उन्होंने दिल्ली में एक कंपनी खोल ली। जिसका नाम रखा गया एन्वायरोटेक इन्स्ट्रूमेंट प्राइवेट लिमिटेड। लेकिन उनका दुनिया से मोहभंग हो गया। 11 जून 2011 को गंगा दशहरा के दिन उन्होंने जोशी मठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती को गुरु मानकर संन्यास ले लिया और नामकरण हुआ स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद।

Happy Diwali

SUNBEAM SCHOOL

Ayad, Udaipur Phone :- 2413512

Class Pre Nursery(2½yrs.) to Class VIII

Lt. Col. R.D. Ganguli
(Director)

Kunal Ganguli
(Administrator)

सर्दियों के लिए लाजवाब सूप

– पुष्पा जांगिड़

ठंड का मौसम है। सर्दी, जुकाम, बुखार की चपेट में घर में कोई न कोई आता ही है। दवा लेने से तो बेहतर है कि घर में ही हम कुछ लाभकारी पेय तैयार करें। सर्दियों में भोजन से पहले गर्मा-गर्म सूप दवा का अच्छा विकल्प है। ये पौष्टिक भी होते हैं और मौसमी बीमारी से भी बचाने वाले हैं।

नींबू धनिया सूप

नींबू विटामिन-सी से भरपूर होती है। ये सर्दियों में कोल्ड और कफ से रक्षा करता है। इसे बनाने के लिए 50 ग्राम पत्तागोभी, 25 ग्राम गाजर, 20 ग्राम पालक और 25 ग्राम मशरूम को त्रिभुज आकार में काटें और थोड़ी देर तक उबाल लें। इसके बाद अलग से कटे धनिया को पानी में भिगो लें। थोड़ी देर बाद धनिया पानी से बाहर निकालें और उबली सब्जियां पानी में डाल दें। फिर नमक, नींबू का रस और सफेद काली मिर्च डाल दें। शाम के समय यह सूप पिएं तो अच्छा है।

पालक सूप

पालक एंटीऑक्सीडेंट्स गुणों से भरपूर स्रोत है। यह हमारे शरीर के हानिकारक कीटाणुओं से लड़ने में मदद करता है और रोग-प्रतिरोधी क्षमता में इजाफा करता है।

इसे बनाने के लिए कड़ाही में 2 चम्मच मक्खन गर्म करें। आधा कप कटे प्याज डालें और मध्यम आंच पर भूरे होने तक चलाएं। अब इसमें ढाई कप कटे पालक डाल दें और एक मिनट तक चलाएं। दो कप पानी डाल कर मध्यम आंच पर 5 से 7 मिनट तक पकाएं। मिश्रण ठंडा होने पर ब्लेंड कर के प्यूरी बना लें। अब मिश्रण को कड़ाही में डाल दें। दूध और कॉर्नफ्लोर के मिश्रण को एक बाउल में डालें और उसमें थोड़ी क्रीम मिला दें। अब इसमें प्यूरी डाल कर 2 मिनट तक पकाएं। फिर स्वाद के अनुसार नमक और काली मिर्च डाल कर 1 मिनट कर पकाएं।

गाजर - चुकंदर का शोरबा

चुकंदर में कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, फॉलिक एसिड, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स जैसे पौष्टिक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं। चुकंदर प्राकृतिक रूप से गुर्दों और पित्ताशय की सफाई करता है। वहीं गाजर विटामिन ए का सबसे अच्छा स्रोत होता है। गाजर में बीटा कैरोटिन की मात्रा उसके लाल रंग से पता चलती है। यह उनकी रोग-प्रतिरोधी क्षमता के लिए बेहद फायदेमंद है। बनाने के लिए कड़ाही में तेल गर्म करें और तेज पत्ता, जीरा, अदरक डालकर एक मिनट तक पकाएं। इसमें गाजर, चुकंदर और हरी मिर्च डाल कर 5 मिनट तक पकाएं। पानी डालें और जब उबाल आने लगे तो पानी अलग करें और प्यूरी बना लें। कटे गाजर और चुकंदर से इसे सजाएं।

पेपर रसम

काली मिर्च कफ, कोल्ड और छींक को ठीक करती है। इसमें अच्छी मात्रा में विटामिन्स, मिनरल और एंटीऑक्सीडेंट्स मौजूद होते हैं, जो फ्री रैडिकल्स से रक्षा करते हैं और रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाते हैं। इस सूप में मौजूद मसाले पाचन शक्ति को भी बेहतर करते हैं।

इसे बनाने के लिए गर्म पानी में इमली भिगोएं और निचोड़ कर पानी अलग कर लें। अब मिक्सर में जीरा, काली मिर्च और लहसुन को पीस लें। फिर इमली के पानी में कटे टमाटर, हल्दी पाउडर, क्रश की हुई काली मिर्च, जीरा, लहसुन, नमक और करी पत्ते को एक साथ उबाल लें। उबाल आने पर आंच को कम करें और 10-15 मिनट के लिए पकाएं। कच्ची इमली की गंध आ रही हो तो थोड़ा और पकाएं। अब एक चम्मच घी में सरसों डालें और लाल मिर्च, करी पत्ते से छौंक लें। फिर रसम ऊपर से डाल दें।

हर तीसरे सेकंड, एक भुलक्कड़

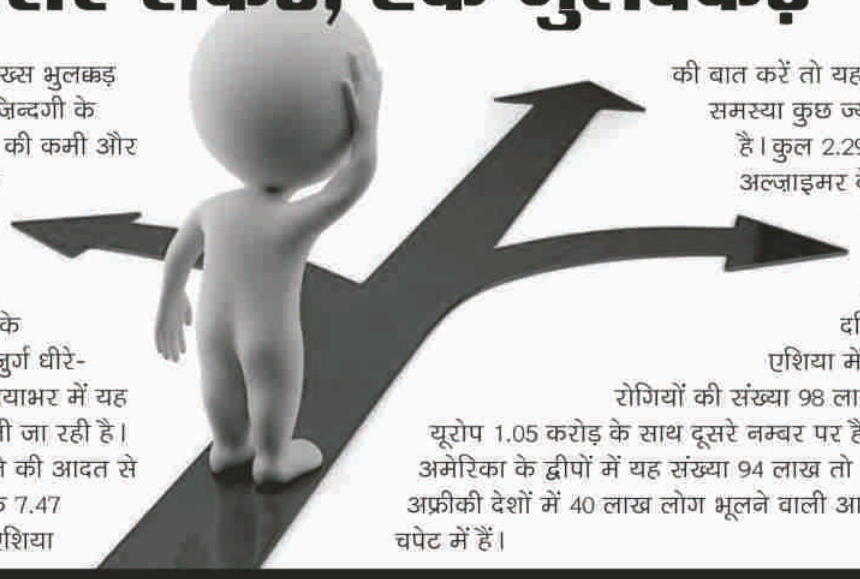

दुनिया में हर तीसरे सेकंड एक शख्स भुलक्कड़ बनता जा रहा है। भागती-दौड़ती ज़िन्दगी के तनाव, सही खान-पान व व्यायाम की कमी और बढ़ती उम्र जैसे कई कारण हमारी याददाश्त छीनने में लगे हैं। डिमेंशिया का ही एक प्रकार अल्ज़ाइमर, जो मस्तिष्क कोशिकाओं के लगातार नुकसान के कारण होता है, में खासतौर से बुजुर्ग धीरे-धीरे याददाश्त खोने लगते हैं। दुनियाभर में यह बीमारी भयंकर खतरे का रूप लेती जा रही है। विश्वभर में 4.68 करोड़ लोग भूलने की आदत से पीड़ित हैं। इनकी संख्या 2030 तक 7.47 करोड़ तक पहुंच सकती है। यदि एशिया की बात करें तो यहां यह समस्या कुछ ज्यादा ही है। कुल 2.29 करोड़ अल्ज़ाइमर के मरीज एशिया में हैं। दक्षिण एशिया में ऐसे रोगियों की संख्या 98 लाख है। यूरोप 1.05 करोड़ के साथ दूसरे नम्बर पर है। अमेरिका के द्वीपों में यह संख्या 94 लाख तो अफ्रीकी देशों में 40 लाख लोग भूलने वाली आदत की चपेट में हैं।

चीन-अमेरिका के बाद भारत का नम्बर

देश	मरीज	देश	मरीज	जापान	31 लाख
चीन	95 लाख	रूस	13 लाख	इंडोनेशिया	12 लाख
जर्मनी	16 लाख	भारत	41 लाख	ब्राजील	16 लाख
अमेरिका	42 लाख	इटली	12 लाख	फ्रांस	12 लाख

पद्म पुरस्कार के लिए 49,992 नामांकन

नई दिल्ली। देश के श ीर्ष नागरिक सम्मान में शुमार पद्म पुरस्कार 2019 के लिए रिकॉर्ड 49,992 नामांकन किए गए हैं। यह नामांकन वर्ष 2010 की तुलना में 32 गुना ज्यादा है। वर्ष 2010 में मात्र 1,313 नामांकन हुए थे। वर्ष 2016 में 18,768 और वर्ष 2017 में 35,595 नामांकन किए गए थे। पद्म पुरस्कारों के बारे में गृह मंत्रालय द्वारा यह जानकारी दी गई।

'मी टू' ने छीना अकबर का ताज

-सुधीर जोशी

सोशल मीडिया पर हैशटैग मी टू के साथ महिलाएं बता रही हैं यौन शोषण की घटनाएं

मी टू यानी 'मैं भी' या 'मेरे साथ भी'। यौन उत्पीड़न की शिकार हुई बहुत सी भारतीय महिलाएं सोशल मीडिया पर हैशटैग मी टू के साथ 25 सितंबर 2018 से अपने साथ घटित नई-पुरानी घटनाएं बयां कर रही हैं। इसके बाद से पूरे देश में मी टू कैंपेन की तेजी से उठ रही लपटों में बड़े-बड़े झुलसा रहे है। देश में इसकी शरुआत मुंबई की मायानगरी से हुई। फिर धीरे-धीरे इसने सरकार, साहित्य और मीडिया संस्थानों के कर्णधारों को भी अपनी चपेट में ले लिया। फिल्मी दुनिया के प्रसिद्ध अभिनेता नाना पाटेकर पर सबसे पहले आरोप लगे। सिलसिलेवार नाम सामने आने के बाद 17 अक्टूबर को आखिरकार 67 वर्षीय विदेश राज्यमंत्री एमजे अकबर को यौन उत्पीडन् के मामले में इस्तीफा देना पड़ा। उन पर 10 दिनों में 20 पूर्व महिला सहयोगी पत्रकारों ने आरोप लगाए। उन पर आरोपों की संख्या अभी बढ़ती ही जा रही है। चारों तरफ से घिरे अकबर के पास इस्तीफा देने के अलावा कोई चारा नहीं था। उचित होता कि विदेश यात्रा से लौटते ही वे त्यागपत्र देने का फैसला लेते, क्योंकि उस समय तक कई महिलाएं उन पर यौन उत्पीडन् के आरोप लगा चुकी थीं। इनमें कई आरोप गंभीर थे और खुद को शर्मसार करने वाले थे। बावजूद इसके विदेश यात्रा से लौटने पर पहले तो उन्होंने अपने पर लगे आरोपों को सिरे से खारिज किया और फिर आरोप लगाने वाली महिला पत्रकारों पर मानहानि का मुकदमा करने की घोषणा की। वह एक महिला पत्रकार के खिलाफ तो अदालत पहुंच भी गए हैं। कायदे से उन्हें अदालत जाने की घोषणा करने के साथ ही मंत्री पद छोड़ देना चाहिए था। लेकिन उन्होंने ऐसा तब किया, जब उन्हें कठघरे में खड़ा करने वाले आरापों की संख्या बढने् लगी। एक क्षण के लिए माना जा सकता है कि एक-दो महिलाएं किसी कथित एजेंडे के तहत उनके खिलाफ खड़ी हो गई हों, लेकिन इस पर यकीन करना कठिन है कि एक के बाद एक करीब 20 महिलाएं उन पर मिथ्या आरोप लगाएं। लोकतंत्र में लोक भावना का अपना विशिष्ट महत्व है। उच्च पदों पर बैठे लोगों को न केवल लोक भावना की परवाह करनी चाहिए बल्कि उदाहरण बनने वाले आचरण का परिचय भी देना चाहिए। एमजे अकबर ऐसा करने में चूक गए। यह स्वाभाविक है कि एमजे अकबर के त्यागपत्र को मी टू अभियान की जीत के तौर पर देखा जाए लेकिन इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि उन पर लगे आरोपों को प्रमाणित करना भी एक कठिन काम है। चूंकि एमजे अकबर केंद्र सरकार में मंत्री थे इसलिए उन पर इस्तीफे का दबाव था। लेकिन मी टू अभियान के तहत कठघरे में खड़े अन्य कई लोग किसी सार्वजनिक पद पर नहीं हैं और इसीलिए उनके खिलाफ कार्रवाई भी मुश्किल लग रही हैं। यह मुश्किल इसलिए भी है क्योंकि यौन उत्पीडन् की

2006 में आया मी-टू शब्द, 2017 में आंदोलन बना

अमेरिका की सामाजिक कार्यकर्ता टराना बुर्के ने महिलाओं के साथ होने वाले यौन उत्पीडन् के खिलाफ 2006 में आवाज उठाई। उस वक्त बुर्के ने दुनिया भर की महिलाओं से अपील की कि अगर वो भी इसकी शिकार हैं, तो मी-टू शब्द के साथ अभिव्यक्ति करें। 2017 में एक बार फिर ये शब्द चर्चा में आया। हॉलीवुड अभिनेत्री एलीसा मिलानो ने खुलासा किया कि दिग्गज प्रोड्यूसर हार्वे वीन्सटीन ने उनका और तमाम अन्य अभिनेत्रियों का यौन उत्पीडन् किया। वीन्सटीन के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज हुई। इस खुलासे से मी-टू कैम्पैन जिंदा हो गया। दुनिया भर की महिलाओं ने मी-टू शब्द के साथ अपने साथ हुए किसी भी दुर्व्यवहार के खिलाफ आवाज उठाई। मी-टू कैम्पेन शुरू होने के 24 घंटे में ही फेसबुक पर इससे जुड़े 1.20 करोड़ पोस्ट और ट्विटर पर 50 लाख ट्वीट किए गए थे। टाइम के एक सर्वे में 82 प्रतिशत महिलाओं ने माना था कि मी-टू की वजह से उन्हें शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत मिली।

बरसों पुरानी घटना के सबूत जुटाना आसान काम नहीं है। स्पष्ट है कि मी टू अभियान की अपनी एक सीमा है। एक तो कोई आम महिला किसी सामान्य अचर्चित शख्स पर यौन शोषण के आरोप लगाए तो उसका मामला शायद ही सुर्खियां बने और दूसरा ऐसा कोई सक्षम तंत्र नहीं दिखता जिससे बरसों पुराने मामले को अदालत के समक्ष सही साबित किया जा सके। ऐसे में एक ओर जहां यह जरूरी है कि महिलाएं यौन शोषण के हालात से दो-चार होते ही उसके खिलाफ आवाज उठाएं, वहीं दूसरी ओर यह भी कि समाज एक ऐसा माहौल निर्मित करना जिम्मेदारी समझे, जिसमें कोई किसी महिला के मान-सम्मान से खेलने की हिम्मत नहीं जुटा सके।

अकबर को राजीव गांधी लाए थे राजनीति में

यौन उत्पीड़न के आरोपों में त्यागपत्र देने वाले एमजे अकबर पत्रकारिता से सियासत में आए। वे देश के कई अंग्रेजी अखबारों में संपादक रहे। उनको राजनीति में लाने वाले राजीव गांधी थे। राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने के बाद दोनों के रिश्ते गहरे होते गए। बाद में उन्होंने राजनीति में आने का फैसला लिया। कांग्रेस ने 1989 में अकबर को बिहार की मुस्लिम बहुल लोकसभा सीट किशनगंज से मैदान में उतारा था। हालांकि कांग्रेस देश में हार गई लेकिन अकबर जीतने में सफल हुए। 1991 में अकबर को हार का सामना करना पड़ा और वे फिर से पत्रकारिता में लौट आए। 2002 के गुजरात दंगों के बाद उन्होंने राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी की जमकर आलोचना की

थी। नरेंद्र मोदी के बाद उन्होंने कांग्रेस और गांधी परिवार की भी जमकर आलोचना की और उनके खिलाफ कई लेख भी लिखे, इसके बाद वे बीजेपी के करीब आए। अकबर ने अपनी दूसरी पारी की शुरुआत 2014 में की और वे बीजेपी में शामिल हो गए। तब उन्हें प्रवक्ता बनाया गया।

बाद में पांच जुलाई 2016 को मोदी ने जब मंत्रिमंडल में फेरबदल किया तो उनको विदेश राज्य मंत्री बनाया गया। भाजपा ने पहले उन्हें झारखंड से राज्यसभा सदस्य और दोबारा से मध्यप्रदेश के जरिये राज्यसभा में आए। मी टू कैंपेन के तहत उन पर पहला आरोप वरिष्ठ पत्रकार प्रिया रमानी ने लगाया। इसके बाद कई महिला पत्रकारों ने एक के बाद एक आरोप लगाना शुरू किया।

तनुश्री के रास्ते भारत में आया मी टू

भारत में यह आंदोलन सही मायनों में 25 सितंबर 2018 को शुरू हुआ, जब बॉलीवुड एक्ट्रेस तनुश्री दत्ता ने एक्टर नाना पाटेकर के खिलाफ यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया। बाद में एक्टर आलोक नाथ, पीयूष मिश्रा, रजत कपूर, रोहित रॉय, डायरेक्टर विकास बहल, सुभाष घई, साजिद खान, सुभाष कपूर, लव रंजन, विवेक अग्निहोत्री, प्रॉड्यूसर गौरांग दोषी, नाटककार किरण नागरकर, कमीडियन उत्सव चक्रवर्ती, गुरसिमरन खंबा, अदिति मित्तल, क्रिकेटर लसिथ मलिंगा, अर्जुन रणतुंगा, सिंगर कैलाश खेर, रघु दीक्षित, अभिजीत भट्टाचार्य, वैरामुत्तू रामासामी, राइटर वरुण ग्रोवर, चेतन भगत, मॉडल जुल्फी सईद, विनोद दुआ, केआर श्रीनिवास, गौतम अधिकारी, मनोज रामचंद्रन, मयंक जैन, सिद्धार्थ भाटिया, मेघनाद बोस, उदय सिंह राणा, सिद्धांत मिश्रा आदि भी इसकी चपेट में आए गए।

उपलब्धि

कुदरती किडनी के विकल्प की खोज

शोधकर्ताओं ने एक ऐसी कृत्रिम किडनी विकसित की है, जो मरीजों को डायलिसिस और कुदरती किडनी के प्रत्यारोपण से निजात दिला सकती है। अमेरिका के सान फ्रांसिस्को स्थित कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार कृत्रिम किडनी एक इम्प्लांट अर्थात् प्रत्यारोपित किया जाने वाला उपकरण है। यह एक कप जितना बड़ा है। जो कुदरती किडनी के समान कार्य करने में सक्षम है। इसलिए यह किडनी की घातक बीमारी से जूझ रहे मरीजों के लिए जीवन बचाने का विकल्प हो सकता है। स्वस्थ किडनी रक्त से हानिकारक और विषैले तत्वों को निकालती है। वह शरीर के द्रव संतुलन को नियंत्रित रखती है। वह हार्मोन निर्माण करती है जो रक्तचाप व लाल रक्त कणों के उत्पादन को नियंत्रित करने और हड्डियों को स्वस्थ रखने में

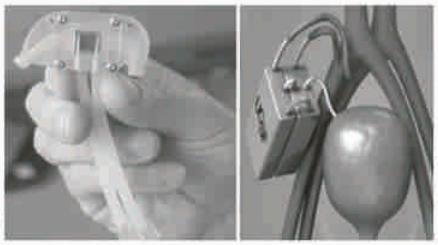

मदद करते हैं।

इंसानों पर परीक्षण जल्द : शोधकर्ताओं ने कहा है कि वे कृत्रिम किडनी का इंसानों पर कुछ महीनों के अंदर ही परीक्षण करने वाले हैं। सुअरों पर इसका कई बार परीक्षण किया जा चुका है, जिसके नतीजे उत्साहजनक रहे हैं। एक संभावित समस्या रक्त के जमने की है, जिससे शोधकर्ता निपटने में लगे हैं।

कैसी है यह कृत्रिम किडनी : इसके दो अनिवार्य अवयव हैं। पहला, रक्त में विभिन्न पदार्थों को अलग करने के लिए फिल्टर और दूसरा एक बायोरेक्टर जो रक्त से निकाले गए पदार्थों को मूत्राशय में स्थानांतरित करता है। ताकि वे गैरजरूरी पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाएं। इन दोनों घटकों को एक छोटे से डिब्बे में संयोजित किया गया है।

बाय-बाय... बाबा

सतलोक आश्रम के बाबा रामपाल भी पहुंचे सीखंचो के पीछे, उम्रकैद

साल 2014 में हिसार के सतलोक आश्रम से चार महिलाओं और एक बच्चे का शव मिलने के बाद रामपाल और उसके 27 अनुयायियों पर लगे थे हत्या के आरोप

-रमेश गोस्वामी

हरियाणा के हिसार की जिला अदालत ने पांच लोगों की हत्या के मामले में उपदेशक बाबा रामपाल को 16 अक्टूबर को उम्रकैद की सजा सुनाई। अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश डीआर चालिया ने उसके 14 अन्य अनुयायियों को भी इन मामलों में सजा सुनाई। हिसार के बरवाला कस्बे में स्थित रामपाल के सतलोक आश्रम से 19 नवंबर, 2014 को चार महिलाओं और एक बच्चे का शव मिलने के बाद बाबा और उसके 27 अनुयायियों पर हत्या और लोगों को गलत तरीके से बंधक बनाने के आरोप लगे थे। वर्ष 2014 में आश्रम परिसर से रामपाल के 15 हजार से ज्यादा अनुयायियों को खाली कराने को लेकर उसके कुछ समर्थकों और पुलिस के बीच झड़प के बाद रामपाल को गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तारी के बाद हुई हिंसा में 5 लोगों की मौत हुई थी। पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने रामपाल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया था। रामपाल ने इस आदेश पर पुलिस कार्रवाई का प्रतिरोध किया था। उसने अदालत की अवमानना जैसे आरोपों पर जवाब देने के लिए उच्च न्यायालय में पेश होने से भी इनकार किया और आश्रम में छिपा रहा ।

नौकरी छोड़ बन गया संत

हरियाणा के सोनीपत की गोहाना तहसील के धनाना में पैदा हुआ रामपाल हरियाणा सरकार के सिंचाई विभाग में जूनियर इंजीनियर था। स्वामी रामदेवानंद महाराज का शिष्य बनने के बाद रामपाल ने नौकरी छोड़ प्रवचन देना शुरू किया। कबीर पंथ का अनुसरण कर अनुयायी बनाने में जुट गया। साल 1999 में करौंथा गांव में उसने सतलोक आश्रम का निर्माण किया।

2006 में रामपाल ने आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' को लेकर विवादित टिप्पणी की। इसके बाद आर्य समाज और रामपाल समर्थकों के बीच हिंसक झड़पें भी हुईं।

जिनमें एक महिला की मौत हो गई। पुलिस ने रामपाल को हत्या के आरोप में हिरासत में लिया। इसके बाद रामपाल को करीब 22 महीने जेल में काटने पड़े। 30 अप्रैल 2008 को वह जमानत पर रिहा हुआ। इसके बाद साल 2014 में मामले की सुनवाई के लिए कोर्ट में पेश नहीं हुआ, । इस दौरान रामपाल के समर्थकों ने पुलिस से हिंसक झड़प की जिसमें करीब 120 लोग घायल हो गए। पुलिस और अर्धसैनिक बलों के जवानों ने 12 दिनों बाद उन्हें गिरफ्तार किया। इस दौरान सतलोक आश्रम से पांच महिलाओं और एक बच्चे की लाश भी मिली थी। रामपाल और उसके अनुयायियों के खिलाफ 17 नवंबर 2014 को आईपीसी की धारा 186 सरकारी कामकाज के निर्वहन में लोक सेवक को बाधा डालना, 332 जान-बूझकर लोकसेवक को उसके कर्तव्य के निर्वहन में चोट पहुंचाना, 353 लोक सेवक को उसका कर्तव्य पूरा करने से रोकने के लिए हमला या आपराधिक बल प्रयोग के तहत मामला दर्ज किया गया था।

बाबा जो रहे विवादों में

बाबा गुरमीत राम रहीम

इन पर अपनी दो शिष्याओं के साथ 18 साल पहले दुष्कर्म करने और आपराधिक धमकी देने के मामले में 20 साल की सजा सुनाई गई है। इसके अलावा उस पर 30 लाख रुपए की जुर्माना भी लगाया गया है। डेरा प्रमुख को दोनों मामलों में 10-10 साल की जेल की सजा हुई है जिसे बारी-बारी से भुगतना होगा। इससे पहले भी उस पर कई तरह के आरोप लग चुके हैं।

नित्यानंद स्वामी

ये दक्षिण भारत के मशहूर धर्मगुरु हैं जिनके कई आश्रम हैं। साल 2010 में उनकी कथित सेक्स सीडी सामने आई थी और उन पर आरोप लगा कि वीडियो में वो एक एक्ट्रेस के साथ शारीरिक संबंध बना रहे हैं। हालांकि बाद में इस सीडी की जांच हुई और फोरेंसिक लैब ने इस सीडी को सही बताया। जिसके कारण उन्हें जेल की सलाखों के पीछे जाना पड़ा लेकिन कुछ दिन बाद उन्हें जमानत मिल गई।

स्वामी परमानंद

राम शंकर तिवारी ऊर्फ स्वामी परमानंद को सेक्सुअल हैरेसमेंट के आरोप में यूपी पुलिस ने गिरफ्तार किया था। आरोप के मुताबिक बाबा उन महिलाओं को अपना शिकार बनाता था जो मां ना बन पाने के कारण परेशान रहती थीं। स्वामी परमानंद ऐसी महिलाओं के इलाज के नाम पर उनके साथ घिनौनी करतूत को अंजाम देता था। हालांकि आरोपी बाबा ने अपने पर लगे इन आरोपों से इंकार किया है।

स्वामी भीमानंद महाराज

चित्रकूट के चमरोहा गांव के निवासी स्वामी भीमानंद महाराज को साल 1997 में दिल्ली के लाजपत नगर से गिरफ्तार किया गया था। भीमानंद महाराज पर देशभर में व्यापक स्तर पर सैक्स रैकेट चलाने का आरोप लगा था। हालांकि जब स्वामी भीमानंद महाराज जेल से बाहर आया तब खुद को साईं बाबा का शिष्य बताने लगा।

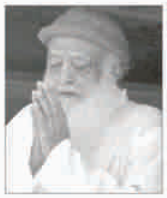

आसाराम बापू

नाबालिग लडकी से रेप के मामले में जेल की सजा काट रहे आसाराम बापू के खिलाफ कई अपराधिक मामले दर्ज हैं। फिलहाल राजस्थान की जोधपुर जेल में वे अपने कर्मों की सजा काट रहे हैं। उनके खिलाफ गैरकानूनी रूप से जमीन हथियाने, तंत्र-मंत्र के लिए बच्चों की हत्या करने, रेप सहित अन्य कई मामलों में पुलिस अब भी जांच कर रही है।

राधे मां

रातों रात नाम और शोहरत पाने वाली राधे मां का जीवन विवादों से घिरा रहा है। राधे मां पर सेक्स रैकेट चलाने से लेकर दहेज मांगने और धोखाधड़ी करने तक के आरोप लग चुके हैं। इसके अलावा फ्लाइट में त्रिशूल ले जाने के मामले में भी वे फंस चुकी हैं। इन सांसारिक विवादों के अलावा जूना अखाड़े द्वारा उन्हें महामंडलेश्वर की उपाधि देना भी विवादों में आ गया, जिसके बाद उनसे यह उपाधि वापस ले ली गई।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

रितेश जैन

मै. ऋषि एन्टरप्राइजेज

(रेल्वे कॉन्ट्रेक्टर)

मकान नं. 2, न्यू बैंक कॉलोनी, लोकेन्द्र भवन कम्पाउण्ड, रतलाम-457001 (म.प्र.)

फोन : 07412-232858

राजपूतों ने छेड़ी 'स्वाभिमान' की जंग

मानवेंद्र के कांग्रेस में जाने से मारवाड़ अंचल की तीन दर्जन सीटों के गड़बड़ा सकते हैं भाजपा के समीकरण

-संदीप गर्ग

वसुंधरा राजे को 2003 में भाजपा आलाकमान ने राजस्थान में मुख्यमंत्री का चेहरा बनाकर भेजा था तब अटल जी प्रधानमंत्री थे। माना जाता है कि इसके लिए भैरोसिंह शेखावत ने केंद्रीय नेतृत्व को इशारा किया था। वसुंधरा राजे खुद को राजपूतों की बेटी और जाटों की बहू के नाम पर वोट बटोरती रही। उस दौर में भैरो सिंह शेखावत उपराष्ट्रपति थे। इधर, बाड़मेर से आने वाले जसवंत सिंह केंद्र की सियासत में ऐसे उलझे कि उन्हें राजस्थान की राजनीति को समझने का मौका ही नहीं मिल पाया। ऐसे में सूबे के राजपूत वसुंधरा राजे के पक्ष में लामबंद हो गए। राज्य में पिछले 15 साल से राजपूत वोट वसुंधरा राजे के साथ खड़े थे। लेकिन स्थितियां बदलनी शुरू हुई 24 जून 2017 को गैंगस्टर आनंदपाल के एनकाउंटर के बाद। राजपूत समाज का एक हिस्सा एनकाउंटर की सीबीआई जांच की मांग को लेकर आंदोलन पर उतर आया था। आनंदपाल के परिजन दाह संस्कार से इंकार करते रहे। 20 दिन तक सडक़ों पर आंदोलन चला और आनंदपाल के गांव सांवराद में राजपूत समाज के प्रदर्शन के खिलाफ पुलिस सख्त हो गई। परिजनों की इच्छा के खिलाफ पुलिस ने आनंदपाल के शव का दाह संस्कार किया। राजपूत समाज में इस बात को लेकर भी काफी गुस्सा था कि सूबे की वो सरकार उनकी बात नहीं सुन रही है, जिसके लिए वे कंधे से कंधा मिलाकर खड़े थे। इस वक्त भी राजपूत समाज अपने आप को सियासी तौर पर कमजोर महसूस कर रहा था। 1962 में जब आजाद भारत के सिर पर तीसरे लोकसभा चुनाव का भार था तब राजस्थान के तत्कालीन सीएम मोहन लाल सुखाडिया निराश थे। उन्होंने सियासी चौसर पर एक पासा फेंका। यह था गायत्री देवी को जयपुर सीट से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़वाना। इसके लिए जयपुर की पूर्व महारानी गायत्री देवी के पास यह प्रस्ताव लेकर वे खुद गए। लेकिन गायत्री देवी ने ना सिर्फ प्रस्ताव खारिज किया बल्कि स्वतंत्र पार्टी के टिकट पर जयपुर के मैदान में रणभेरी बजा दी।

1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम के लागू होने के बाद 'राज प्रमुख' के पद को खत्म कर दिया गया। महाराजा मान सिंह की जगह गुरुमुख निहाल सिंह को राजस्थान का पहला राज्यपाल बनाया गया।

इस तरह आजादी के करीब एक दशक बाद रजवाड़ों की सत्ता में भागीदारी पूरी तरह हाशिए पर चली गई। इधर, गायत्री देवी 1962 का लोकसभा चुनाव कांग्रेस के खिलाफ लड़ी और 1,57,692 वोटों जीतीं। यह 1962 के लोकसभा चुनाव में सबसे बड़ी जीत थी। स्वाभिमान के जंग की दूसरी घटना है जोधपुर के सामराऊ की। जनवरी 2018 में यहां शराब माफिया के आपसी झगड़े में जाट समाज से आने वाले हनुमान साई की हत्या हो गई। इस घटना ने जातिगत रंग ले लिया और सामराऊ गांव में राजपूत समाज के घरों में आग लगा दी गई। इस लोकसभा क्षेत्र से केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत सांसद हैं। इस घटना ने

2014 से चला ठिकाने लगाने का पैंतरा

2014 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी की शानदार जीत हुई। इस चुनाव को मोदी की ऐतिहासिक जीत के अलावा सियासत में दो कारणों से भी याद रखा जाता है। उनमें पहला कांग्रेस को सबसे ताकतवर वार से पटकनी देना और दूसरा बीजेपी के 'ओल्ड गार्डस' को ठिकाने लगाने की रवायत का चल पडऩा। इसमें सबसे पहले चपेट में आए अटल बिहारी वाजपेयी के खास सिपहसालार जसवंत सिंह। 2014 में बीजेपी ने उन्हें बाड़मेर सीट से टिकट से इंकार कर दिया। जसवंत सिंह बाड़मेर के रहने वाले जरूर थे लेकिन वे यहां से कभी चुनाव नहीं लड़े। 2004 में उनके बेटे मानवेंद्र सिंह जरूर बीजेपी की टिकट पर यहां से चुनाव जीते थे लेकिन यह परंपरागत तौर पर कभी भी जसवंत सिंह परिवार की सीट नहीं रही। 2014 में जसवंत सिंह निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर मैदान में उतर गए। इस चुनाव में उनका चुनाव चिन्ह था, टॉर्च। लेकिन मोदी दौर में जसवंत सिंह और उनकी टॉर्च दोनों अपनी चमक खोने लगी थी। वो बीजेपी के कर्नल सोनाराम के खिलाफ 87461 वोट से चुनाव हार गए। जबकि जसवंत सिंह के बेटे मानवेन्द्र सिंह 2013 में बीजेपी की टिकट पर शिव विधानसभा से चुनाव जीते। 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान बागी तेवरों के चलते पार्टी ने मानवेंद्र को निलंबित कर दिया। यह निलंबन एक साल भी नहीं टिका और उन्हें फिर से बीजेपी में ले लिया गया। पिछले चार साल से मानवेंद्र सिंह कोमा में पड़े अपने पिता की तबियत और उनकी सियासी विरासत को संवारने की जद्दोजहद में थे। 2015 में फिर से भाजपा खेमे में लौटे मानवेंद्र सिंह ने 2018 के विधानसभा चुनाव के ऐन वक्त पर कांग्रेस में शामिल होकर चुनावी समीकरणों को उलट दिया।

राजपूत समाज की बीजेपी के प्रति नाराजगी को और अधिक गहरा कर दिया। इस सब के बीच 'पद्मावत' फिल्म ने राजपूतों के ध्रुवीकरण को और हवा दे दी।

मानवेंद्र को कांग्रेस ने अपनाया

मानवेंद्र सिंह ने 'कमल का फूल, हमारी भूल' के उच्चारण के साथ भाजपा को अलविदा कह दिया। फिलहाल वे 'कांग्रेस का हाथ, हमारे साथ' का नारा लगा रहे हैं। 17 अक्टूबर को मानवेंद्र सिंह ने कांग्रेस का हाथ थाम लिया। इस मौके पर कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, राजस्थान के प्रभारी व राष्ट्रीय महासचिव अविनाश पांडे, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह भी मौजूद थे।

मानवेंद्र सिंह राजस्थान में कांग्रेस का राजपूत फेस होंगे। कांग्रेस में इनके शामिल होने से मारवाड़ (जोधपुर) संभाग की करीब तीन दर्जन सीटों के समीकरण बदल सकते हैं। भाजपा में खलबली मची हुई है। प्रदेश के विधानसभा चुनाव से पहले ही भाजपा के परंपरागत समर्थक राजपूत और ब्राह्मण वर्ग के दो वरिष्ठ नेताओं के पार्टी छोड़ने से केंद्रीय नेतृत्व सकते में है। इस ठंड की कम्पन से अब प्रदेश में चुनाव की कमान पूरी तरह से भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने संभाल ली है। राज्य की भाजपा सरकार से नाराज चल रहे राजपूत समाज को कांग्रेस के साथ लाने में मानवेंद्र कितने सफल होंगे, यह तो चुनाव परिणाम आने के बाद ही सामने आएगा। लेकिन कांग्रेस को उनसे काफी उम्मीद हैं। कयास लगाए जा रहे हैं कि मानवेंद्र अब केंद्र की राजनीति में भी कदमताल करेंगे ।

कांग्रेस उन्हें बाड़मेर संसदीय सीट से लोकसभा का चुनाव लड़ा सकती है। उनकी पत्नी चित्रा सिंह शिव से विधानसभा का चुनाव लड़ सकती हैं। दूसरी ओर भाजपा के पूर्व प्रदेश महामंत्री रामपाल जाट भीलवाड़ा ने आम आदमी पार्टी (आप) की सदस्यता ग्रहण कर ली है। भाजपा के वरिष्ठ जाट नेता नारायण राम बेड़ा, वसुंधरा राजे सरकार में पर्यटन मंत्री रही उषा पुनिया और पूर्व विधायक रणवीर पहलवान के भी कांग्रेस में शामिल होने के आसार हैं। इन तीनों को पार्टी में शामिल कर कांग्रेस जाट मतदाताओं को साधने पर उतावली है। इधर, आनंदपाल प्रकरण में पुलिस की ओर से दर्ज कराए सात मामले वापस लेने के लिए सरकार ने कलेक्टर व एसपी से रिपोर्ट मांगी है। सरकार ने राजपूत समाज के प्रतिनिधि मंडल से मामला वापस लेने का वादा किया था। पुलिस ने चालान पेश करने के साथ ऐसे मामलों को वापस लेने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। गृह विभाग ने रिपोर्ट जयपुर, पाली, जोधपुर व चूरू जिलों से मांगी है। ये सभी मामले मुठभेड़ के बाद कई जगह हुए विरोध और अन्य मामलों को लेकर दर्ज किए गए थे।

हर दिन नया-निराला स्वाद

ज्योति पर्व दीपावली लगातार पांच दिन चलने वाले पूजन-अर्चन, नैवेद्य समर्पण, प्रसाद ग्रहण तथा आमोद-प्रमोद का उत्सव है। धनतेरस से भाई-दूज तक हर दिन की अपनी मान्यताएं, परम्पराएं और विशिष्ट पकवान बनाने का अवसर है। प्रस्तुत है, इस पर्व के पांच निराले स्वाद

रेणु शर्मा

खजूर-ड्राईफ्रूट लड्डू

सामग्री : गुठली रहित खजूर बारीक कटे हुए - एक प्याला, बादाम, काजू, अखरोट प्रत्येक - एक चौथाई प्याला, दोनों मगज प्रत्येक - एक बड़ा चम्मच, किशमिश - 2 बड़े चम्मच, गोंद फुलाया हुआ - 2 बड़े चम्मच, देशी घी - एक छोटा चम्मच, इलायची पाउडर - आधा छोटा चम्मच।

विधि : पेन में घी गरम करके दोनों मगज हल्के गुलाबी सेक लें। बचे घी में कटा खजूर डालकर पांच मिनट तक चलाएं और ठंडा होने दें। सारी सामग्री को मिलाकर लड्डू का आकार दें।

शाही मालपुआ

सामग्री : आधा कप सूजी, आधा कप मैदा, आधा कप किसा हुआ मावा, 1 कप दही, आधा चम्मच सौंफ, 1 कप चीनी, 1 कप घी, 1-1 चम्मच पिस्ता, बादाम, चिरौंजी।

विधि : सूजी तथा मैदा एकसार करें। इसमें आवश्यकतानुसार दही मिलाकर अच्छी तरह फेंट लें। तैयार घोल में मावा और सौंफ मिला दें। एक पैन में पानी व चीनी मिलाकर गर्म करने रखें। इसे 8-10 मिनट पकाएं। एक तार की चाशनी तैयार है। इसे अलग रख दें। एक चपटे तले वाली कड़ाही में घी गर्म करें। इसे कड़छुल की मदद से थोड़ा-सा घोल डालें और उसी के उल्टे हिस्से में इसे चीले की तरह चपटा फैलाएं। सुनहरा होने पर मालपुआ निकालकर चाशनी में डालें। इसी तरह से सभी मालपुए बनाएं और मेवों से सजाकर परोसें। इनके साथ फीकी या हल्की मीठी रबड़ी हो तो कहना ही क्या!

टिप : चाशनी बनाते समय शक्कर के पानी में उबाल आने पर एक बड़ा चम्मच दूध डाल दें और जो झाग चाशनी पर तैरता दिखाई दे, उसे चम्मच की मदद से निकालकर हटा दें। दूध डालने से चीनी की गंदगी ऊपर आ जाती है। चाशनी का स्वाद बढ़ाने के लिए उसमें जरा-सी इलायची पाउडर या केसर भी डाल सकते हैं।

केसरिया खीर

सामग्री : 2 लीटर दूध, 1 बड़ा चम्मच चावल, 100 ग्राम चीनी, 1 बड़ा चम्मच किशमिश और 1 बड़ा चम्मच बारीक कटे बादाम व काजू, 12-15 रेशे केसर, 1 छोटा चम्मच इलायची पाउडर।

विधि : चावल धोकर 3 कप पानी में 2 घंटे भिगोकर रखें। जरा-से दूध में केसर के रेशे डालकर रख दें। शेष दूध उबलने रखें। मध्यम आंच पर गाढ़ा होने दें। दूध चौथाई रह जाए, तो इसमें चावल और चीनी डालकर क़रीब 15 मिनट पकाएं। अब इलायची पाउडर और केसर दूध डालकर अच्छी तरह मिला लें। 5 मिनट बाद आंच से उतार लें। एक पैन में घी गर्म करें। इसमें किशमिश डालकर तलें। काजू-बादाम भी तल लें। इन्हें तैयार खीर में डालकर एकसार करें।

टिप : खीर बनाते समय उसमें थोड़ा सा कॉर्न-फ्लोर भी डाल सकते हैं। इससे खीर जल्दी गाढ़ी हो जाएगी और स्वाद भी बढ़ जाएगा।

ब्रेड रसमलाई

सामग्री : ब्रेड स्लाइस - 6 बारीक कटी हुई कीवी व अनार - छह बड़े चम्मच, दूध-आधा लीटर, कंडेस्ट मिल्क - 4 बड़े चम्मच, चीनी-2 बड़े चम्मच।

विधि : कड़ाही में 2 बड़े चम्मच चीनी डालकर भूरी करें। इसमें दूध डालें व एक मिनट उबालें। कंडेंस्ड मिल्क डालकर 5 मिनट पकाकर ठंडा करें। ब्रेड स्लाइस गोल काट लें। हर स्लाइस पर थोड़ा दूध छिड़कें व बीच में एक चम्मच मिक्स फ्रूड रखें। इसे किचन नेपकीन की सहायता से गोल मोड़ दें। रसमलाई प्लेट में रखें, ऊपर से तैयार दूध डालें, फ्रिज में ठंडा करें।

ड्राई फ्रूट पिन्नी

सामग्री : गेंहू का आटा - एक कप, खाने वाली गोंद - आधा कप, चीनी पिसी-एक कप, देशी घी - एक कप, काजू, बादाम, पिस्ते-एक कप(मिले जुले) गोला गिरी, किशमिश व अखरोट-एक कप(मिले जुले), इलायची पाउडर - दो छोटे चम्मच, खसखस-2 बड़े चम्मच।

विधि : सबसे पहले मोटे पैंदे वाले पतीले में देशी घी गर्म करें। अब इसमें गोंद डालें। जब गोंद सिक कर फूल जाए तो इसे निकालकर दरदरा कूट लें। अब इसी घी में आटा डालकर धीमी आंच पर लगातार हिलाते हुए पकाएं। जब आटा सिक कर सुनहरी रंग का होने लगे तो इसमें दरदरी गोंद, बारीक कटे काजू, बादाम पिस्ते, अखरोट डालकर 5-7 मिनट और धीमी आंच पर पकने दें। अब इसमें खसखस, इलायची, किशमिश व कद्दूकस की गोला गिरी मिलाकर कर गैस बंद कर दें। जब मिश्रण थोड़ा ठंडा हो जाए तो इसमें पिसी चीनी डालकर अच्छी तरह मिलाकर इस मिश्रण से मध्यम आकार की पिन्नी बनाकर सर्व करें।

Rupi's Resort is located adjoining Maharana Paratap Airport, Dabok also known as the Udaipur Airport. The hotel offers two star facilities and is near the main tourist attraction of Udaipur, the city of lakes and palaces. The rooms at the hotel are clean and spacious. The hotel is near many crafts bazaars where you can shop for souvenirs to take back home with you. It is well known for its personalized services and cozy environment. It is a peaceful place to unwind.

The Resort's convenient location, exceptional and personalized services has made it a popular choice among the guests. The Resort is a pleasant place with a cozy atmosphere and top level services. It is popular among both the business and leisure travelers for its excellent accommodation facilities, business facilities and fine dining. Hotel is an excellent value for money.

Facilities offers like Gym, Free WiFi, Swimming Pool, Travel Desk, Cyber Café, Maney Exchange, Safe, Health Center, Laundry, Car Rental, Indoor Games, Parking, Doctor on Call, Children Park with Swings, Garden, Laundry and 24 hours Room Service. It also provides a Conference Hall for meetings, conventions and gatherings. The indoor venue includes an air-conditioned auditorium with perfect ambiance to highlight the occasion.

RUPI'S RESORTS (I) PVT. LTD.

Adjoining Airport, Dabok, Udaipur (Rajasthan) INDIA
Phone No.: +91-294-656141-43, Fax: +91-294-2655984
Mobile No.: +91-76655543280
e-mail: info@rupisresort.com, Website: www.rupisresort.com

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

आर्थिक पक्ष मध्यम रहेगा। वृद्धजन व खांसी की पुरानी समस्या वालों को विशेष सावधानी बरतनी होगी। कॅरियर व व्यवसाय-व्यापार में मंदी का समय है, कार्यभार अतिरिक्त रहेगा, दाम्पत्य जीवन में उलझनें बढ़ेंगी। स्वास्थ्य सामान्य, माह का उत्तरार्द्ध खुशी प्रदान कर सकता है। नयी योजनाओं को स्थगित करना फिलहाल ठीक रहेगा।

वृषभ

राजनीति के क्षेत्र के लोगों को नई दिशा मिलेगी और आर्थिक पक्ष मजबूत बनेगा। शारीरिक पीड़ा से निजात मिलेगी, नौकरी एवं व्यवसाय में मान-सम्मान की वृद्धि होगी, दाम्पत्य जीवन में खुशी और परिवार में सुख-शांति रहेगी। अल्पकालिक कार्य योजनाओं पर ध्यान न देकर कार्यक्षेत्र को व्यापक करें।

मिथुन

माह का पूर्वार्द्ध सुकून भरा, उत्तरार्द्ध में बेवजह कार्य में रूकावटों का अनुभव करेंगे। प्रतियोगी परीक्षाओं के परिणाम श्रेष्ठ रहेंगे, रूका हुआ पैसा मिलेगा किन्तु शरीर में जोड़ों के दर्द से परेशान रहेंगे। व्यापार में वृद्धि एवं नौकरी में तरक्की संभव, दाम्पत्य जीवन में खींचतान किन्तु संतान पक्ष से संतोष।

कर्क

बैंक सम्बन्धी लेन-देन में सावधानी बरतें। बौद्धिक क्षमता का का विकास और सन्तान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। आपके कार्यों से लोग प्रभावित होंगे, आर्थिक मामले सुलझेंगे, स्वास्थ्य में अकस्मात गिरावट आ सकती है, व्यवसाय एवं नौकरी के लिए समय ठीक-ठाक है। गृहस्थी में अशान्ति का माहौल, विचारों में उलझन रहेगी।

सिंह

माह मध्यम है, दिवास्वप्न देखने की बजाय कुछ सकारात्मक परिणाम वाली कार्य योजना बनाएं। संतान के कारण कष्ट भोगना पड़ सकता है। आशा के अनुरूप आय नहीं होगी। हृदय रोगी विशेष सावधानी बरतें, व्यापार के लिए समय अनुकूल है किन्तु नौकरी में परेशानी सम्भव।

कन्या

यह माह आपको नये अवसर उपलब्ध करायेगा, जीवन साथी का पूर्ण सहयोग एवं उनके भाग्य से कठिन कार्य भी आसान होंगे, आय के अच्छे अवसर मिलेंगे। स्थाई सम्पत्ति में वृद्धि एवं लाभ होगा। संतान पक्ष से मन खिन्न रहेगा, पैतृक मामले सुलझेंगे।

तुला

यह माह अच्छे परिणाम देगा, सकारात्मक विचारों से मन स्वस्थ रहेगा। हर कार्य को पूरे सोच-विचार से करें। कलात्मक एवं रचनात्मक क्षमता में वृद्धि के कारण कार्यक्षेत्र से सराहना मिलेगी। ससुराल से आर्थिक लाभ किन्तु जोड़ों का दर्द परेशानी का सबब बन सकता है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता, व्यवसाय सम्बन्धी नई योजना पर न विचार करें और न ही मौजूदा कार्य का विस्तार करें।

नवम्बर माह के पर्व-त्योहार

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
07	कार्तिक अमावस्या	दीपावली
08	कार्तिक शुक्ल 1	अन्नकूट/गोवर्धन पूजा
09	कार्तिक शुक्ल 2	भाईदूज/यम द्वितीया/विश्वकर्मा पूजा
14	कार्तिक शुक्ल 7	नेहरू जयंती/बाल दिवस
17	कार्तिक शुक्ल 9	आवंला नवमी
21	कार्तिक शुक्ल 13	ईद मिलादुनबी
23	कार्तिक पूर्णिमा	गुरुनानक जयन्ती
25	मार्गशीर्ष कृष्णा 3	सौभाग्य सुन्दरी व्रत
29	मार्गशीर्ष कृष्णा 7	श्रीकाल भैरवाष्टमी

वृश्चिक

पारिवारिक समस्याएं हल करने के लिए बहुत अधिक झुकना पड़ सकता है, अपने प्रिय व्यर्थ की मांग कर सकते हैं, जिससे रिश्तेदारों एवं जीवनसाथी से वाद-विवाद सम्भव है। नैतिकता पर अडिग रहें, आर्थिक कमी का अनुभव होगा। रक्तचाप की बीमारी वाले विशेष सावधानी बरतें और नौकरी वाले जातक सहयोगियों से उलझने की गलती न करें।

धनु

परिवार में कोई घटना आपको दुःखी कर सकती है, जमीन जायदाद में अड़चनें सम्भव, अनावश्यक लोगों से घनिष्ठता न बढ़ाएं, आर्थिक पक्ष कमजोर रहेगा, मधुमेह वाले जातक सजग रहें। नया कुछ करने से पहले अपने वरिष्ठों से परामर्श अवश्य लें, दाम्पत्य जीवन आनन्दमय रहेगा। सन्तानपक्ष से अच्छे परिणाम मिलेंगे।

मकर

निर्धारित कार्यक्रम में फेरबदल करना पड़ सकता है, ऊर्जा एवं समय दूसरों की मदद में लगायेंगे परन्तु ऐसे मामलों में सावधानी रखें जिससे कोई लेना-देना न हो। फिजूल खर्ची पर नियन्त्रण आवश्यक है, फोड़े-फुन्सी या रक्त विकार उभर सकता है। नौकरी के लिए प्रयासरत जातकों को सफलता मिलेगी, विचारों पर नियन्त्रण नितान्त आवश्यक है।

कुम्भ

ईष्यालु लोगों से घनिष्ठता न बनाएं, कोई भी कार्य समयबद्ध तरीके से सम्पादित करें, व्यर्थ की बहस समय एवं धन दोनों की हानि कर सकती है, दिशा भ्रमित हो सकते हैं, आर्थिक पक्ष कमजोर है, दुर्घटनाओं के योग बन सकते हैं, वाहन के उपयोग के दौरान सावधानी बरतें, व्यवसाय को आगे बढ़ा सकते हैं, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ, गृहस्थ जीवन सामान्य है।

मीन

व्यर्थ के खर्चे परेशानी पैदा कर सकते हैं, कार्य योजनाओं में सतर्कता रखें, पुराने मित्र या रिश्तेदार मिल सकते हैं, आर्थिक पक्ष कमजोर है, स्वास्थ्य से सन्तुष्ट नहीं रहेंगे, उधार देने से बचें नहीं तो विवाद में पड़ सकते हैं। नौकरी में तरक्की के आसार, दाम्पत्य जीवन मधुर किन्तु सन्तान से विवाद सम्भव है। प्रेम-प्रसंग में धोखा हो सकता है।

अरबन बैंकों का एनपीए बड़े बैंकों से आधा

उदयपुर। दी राजस्थान अरबन को-ऑपरेटिव बैंक्स फैडरेशन की 14वीं आम सभा 21 सितम्बर को उदयपुर के शौर्यगढ़ रिसोर्ट में महिला समृद्धि बैंक की मेजबानी में हुई। जिसमें भाग लेने वाले करीब 22 बैंकों के प्रतिनिधियों का स्वागत मेजबान बैंक की अध्यक्ष विद्या किरण अग्रवाल ने किया।

फैडरेशन अध्यक्ष राजेन्द्र गहलोत ने बताया कि भारत में स्थित सरकारी बैंकों के 12 प्रतिशत से अधिक एनपीए की तुलना में अरबन बैंकों का एनपीए केवल 6.7 प्रतिशत है। राजस्थान के अरबन बैंकों का एनपीए तो 3 प्रतिशत से भी कम है। आमसभा में फैडरेशन के सदस्यों से सुझाव आमंत्रित किये गये, जिस पर महिला समृद्धि बैंक की पूर्व अध्यक्ष डॉ. किरण जैन, मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद चपलोत, आदर्श बैंक के एमडी नरेन्द्र सिंह डाबी, फिनग्रोथ बैंक जयपुर के एमडी एके शाह, चित्तौड़ अरबन बैंक की अध्यक्ष विमला सेठिया, एमडी वन्दना वजीरानी, पाली अरबन बैंक के अध्यक्ष जिनेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर अरबन बैंक के अध्यक्ष, जालौर अरबन बैंक के निदेशक मोहन परमार ने सुझाव दिए। फैडरेशन के मुख्य कार्यकारी एम एल शर्मा ने आभार जताया।

मिराज की नई फिल्म 'बाइपास रोड'

उदयपुर। उद्योगपति और फिल्म निर्माता मिराज समूह के प्रमुख मदन पालीवाल ने अपनी एक और नई मूवी में बॉलीवुड एक्टर नील नितिन मुकेश से अनुबंध किया है। इस फिल्म का नाम होगा 'बाइपास रोड'। फिल्म में अदा शर्मा, गुल पनाग और रंजित कपूर भी नजर आएंगे। फिल्म को नील नितिन मुकेश के छोटे भाई नमन नितिन मुकेश डायरेक्ट करेंगे। इस फिल्म को एनएनएम फिल्म्स और मिराज ग्रुप के मदन पालीवाल मिलकर बना रहे हैं। नील नितिन ने भी इस फिल्म का वीडियो शेयर किया है। यह एक थ्रिलर फिल्म है।

डॉ. अरविन्दर चिकित्सक आर्बिट्रेटर

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक्स के सीईओ-सीएमडी डॉ. अरविन्दर सिंह लंदन स्थित चार्टर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ आर्बिट्रेटर्स का एग्जाम 87 प्रतिशत अंकों से क्वालिफाय कर उत्तर भारत के प्रथम आर्बिट्रेटर चिकित्सक बन गए हैं। इन्हें चार्टर्ड इंस्टीट्यूट में एसोसिएट मेंबर बनने का दर्जा प्राप्त हुआ है।

चार्टर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ आर्बिट्रेटर्स विश्व में आर्बिट्रेशन के क्षेत्र में सबसे बड़ी संस्था है और लगभग 150 देशों में इसकी शाखाएं हैं। इनका नाम सभी ब्रांचेस में प्रकाशित किया जाएगा ताकि चिकित्सीय क्षेत्र में होने वाले विवादों का समाधान ये आर्बिट्रेशन जज की हैसियत से कर सकेंगे।

भारतीय कानून के अनुसार आर्बिट्रेशन एवं कन्सीलेशन एक्ट 1996 जो कि अंतरराष्ट्रीय न्यूयॉर्क कॉन्वेंशन से प्रेरित है। इस एक्ट द्वारा आर्बिटेटर को प्राइवेट जज जैसी पॉवर्स दी जाती है, जिनका फैसला अदालतों में मान्य है।

जीप 3-एस का बिक्री केन्द्र आरंभ

उदयपुर। एफसीए इंडिया के प्रसिडेंट और एमडी केविन फ्लिन ने यहां मादड़ी इंडस्ट्रीयल एरिया में निधि कमल कम्पनी प्राइवेट लि. के शोरूम पर नए जीप 3-एस बिक्रऔर सेवा केन्द्र का शुभारंभ किया। कम्पनी के अमिताभ जैन ने बताया कि उदयपुर से 160 किमी के दायरे में जीप के ग्राहकों को बिक्री देने के लिए इस केन्द्र की शुरुआत की गई है। यह राजस्थान में चौथा प्रीमियम बिक्री एवं सेवा केन्द्र है। एफसीए इंडिया ने गत वर्ष 31 जुलाई को मेड-इन-इंडिया जीप कम्पास लांस किया था। सालभर में जीप कम्पास टॉप मीडिया और ब्रांड टाइटल्स से 35 अवार्ड्स के साथ भारत का सबसे परिवर्तित एसयूवी बन गया है। एफसीए इंडिया भारत में अपनी शुरूआत से लेकर 27,000 से अधिक जीप कम्पास

एसयूवी बेच चुका है और 10,000 से ज्यादा युनिट अंतर्राष्ट्रीय राइट हैण्ड ड्राइव बाजार में एक्सपोर्ट कर चुका है।

एनएसएस पर विशेष डाक टिकट जारी

डाक टिकट का विमोचन करते पीएमजी रामभरोसे, कैलाश मानव, जी. एस. गुर्जर व अन्य।

उदयपुर। जीवन की सांध्य वेला में यदि व्यक्ति स्वार्थ त्याग कर समाज सेवा में जुट जाएं तो समाज की अनेक समस्याओं का त्वरित निस्तारण हो सकता है। यह बात 5 अक्टूबर को नारायण सेवा संस्थान पर विशेष डाक टिकट जारी करते हुए अजमेर मंडल के पोस्टमास्टर जनरल रामभरोसे ने कही।

संस्थान के बड़ी ग्राम स्थित सेवा महातीर्थ में आयोजित समारोह में उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों से नि:शुल्क पोलियो ऑपरेशन के लिए आने वाले दिव्यांग एवं उनके परिजनों की सुविधा के लिए संस्थान परिसर में पोस्ट ऑफिस खोले जाने की घोषणा भी की। पांच रुपये मूल्य के इस विशेष डाक टिकट पर संस्थान के 'लोगो' सहित पोलियो हॉस्पीटल का चित्र अंकित है। इससे पूर्व श्री रामभरोसे व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम गुप्ता ने 101 दिव्यांग बच्चों की नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का उद्घाटन किया। इससे पूर्व संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने स्वागत करते हुए संस्थान की 33 वर्षीय सेवा यात्रा की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारतीय डाक विभाग ने डाक टिकट जारी कर संस्थान का मान बढ़ाया है।

समारोह की सहसंस्थापिका कमला देवी अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि, उदयपुर के प्रवर अधीक्षक(डाक) जे. एस. गुर्जर, अजमेर क्षेत्र के निरीक्षक(डाक) कमलेश प्रजापत व संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने भी सम्बोधित किया। संचालन महिम जैन व धन्यवाद ज्ञापन दीपक मेनारिया ने किया।

दीपेश, प्रहलाद व किशोर ट्रस्टी बने

दीपेश हेमनानी

प्रहलाद खथुरिया

किशोर सिंधवानी

उदयपुर। सिन्धी धर्मशाला एसोसिएशन ने दीपेश हेमनानी, प्रहलाद खथुरिया एवं किशोर सिंधवानी को ट्रस्टी के रूप में मनोनीत किया है। एसोसिएशन के अध्यक्ष जगदीश बजाज व महासचिव राजेश चुघ ने बताया कि आने वाले समय में धर्मशाला को नया रूप देकर उसमें आधुनिक तरीके से बदलाव किए ताकि यात्रियों को कम दरों पर अधिक सुविधायें उपलब्ध करायी जा सकें।

ऑटोमोबाइल संघ के चुनाव

गणेश अग्रवाल अध्यक्ष, तुषार बने सचिव

उदयपुर। उदयपुर ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिशन के पिछले दिनों वर्ष 2018-20 के द्विवार्षिक चुनाव सीए महावीर चपलोत के निर्देशन में सम्पन्न हुए, जिसमें गणेश अग्रवाल अध्यक्ष पद पर 24 मतों से विजयी रहे। चुनाव अधिकारी चपलोत ने बताया कि उपाध्यक्ष पद पर बसन्त जैन, सचिव पद पर तुषार जैन, कोषाध्यक्ष पद पर विनय मोगरा तथा सचिव पद पर गुरप्रीत सिंह लवली विजयी रहे। चुनाव में एसोसिएशन के वरिष्ठ सदस्य एवं संरक्षक भीमनदास तलरेजा ने अपनी तीन पीढ़ियों के साथ में चुनाव में मतदान किया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष अग्रवाल का स्वागत करते ऑटोमोबाइल संघ के सदस्य।

नई फोर्ड फिगो एस्पायर अनावरित

उदयपुर। फोर्ड इण्डिया प्रा लि के उदयपुर डीलर के. एस. फोर्ड में नई फोर्ड फिगो एस्पायर का अनावरण विशिष्ट अतिथि पीआई इण्डस्ट्रीज लि. के मुकेश व्यास ने किया। कंपनी के प्रबन्ध निदेशक सुनील कुमार परिहार ने बताया कि नई फोर्ड फिगो एस्पायर में सुरक्षा फीचर का खास ध्यान रखा गया हैं। कार में 6 एयरबैग्स हैं। निदेशक आकाश परिहार ने बताया कि नई फोर्ड फिगो एस्पायर सेडान श्रेणी में पेट्रोल कार में इंजन काफी हल्का और ईंधन किफायती हैं। सेल्स मैनेजर नवीन डी जैन ने बताया कि इसकी डिजाइन व तकनीक ग्राहकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है। यह 7 आकर्षक रंगों में उपलब्ध है।

कुम्भा शास्त्रीय वादन प्रतियोगिता

उदयपुर। शास्त्रीय संगीत विधा एवं इसके उदीयमान कलाकारों को बढ़ावा देने के लिये गत दिनों महाराणा कुम्भा संगीत परिषद एवं डॉ. यशवन्त कोठारी चेरिटेबल पब्लिक ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में उदीयमान कलाकार शास्त्रीय वादन प्रतियोगिता हुई। जिसमें सीनियर वर्ग(19 से 30 वर्ष आयु) प्रतियोगिता में उदयपुर के नीरज मिस्त्री एवं जोधपुर के अखिल बोहरा दोनों प्रथम स्थान पर रहे। जिन्हें कुम्भा संगीत रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया। स्वराज दोषी एवं नरेश राव को कुम्भा संगीत गौरव अवार्ड प्रदान किया गया। भारती सिसोदिया एवं कुणाल गन्धर्व (तृतीय स्थान) को कुम्भा संगीत कलाश्री अवार्ड प्रदान किया गया। आयोजन के मुख्य अतिथि राजमल मेहता, महादेव दमानी एवं विशिष्ट अतिथि वैभव राठौड़, मुकेश शर्मा एवं सुबोध कोठारी थे।

नीलकमल को बेस्ट काउंसलर अवार्ड

उदयपुर। बेंगलुरु के होटल ताज में आयोजित इंडिया लीडरशिप अवार्ड समारोह में उदयपुर की नीलकमल अग्रवाल को बेस्ट वुमेन एजुप्रेनुअर एंड करियर काउंसलर अवार्ड से सम्मानित किया गया। नीलकमल को ये अवार्ड बॉलीवुड अभिनेत्री सोहा अली खान ने सौंपा। ब्लाइंडविक कंपनी की ओर से कई शोध के बाद नील कमल का चयन हुआ। नीलकमल अपने पति अनुपम अग्रवाल के साथ शिक्षा क्षेत्र में सक्रिय हैं।

मातृशक्ति विशेषांक का विमोचन

उदयपुर। समुत्कर्ष समिति के मातृशक्ति विशेषांक का विमोचन अनुष्का एकेडमी में किया गया। विमोचन अनुष्का ग्रुप के संस्थापक डॉ. एस. एस. सुराणा ने किया। विशिष्ट अतिथि निर्मला मेनारिया, संस्था निदेशक राजीव सुराणा, हरिदत्त शर्म व लोकेश जोशी थे।

विट्टी इंटरनेशनल स्कूल सम्मानित

उयदपुर। एजुकेशन वर्ल्ड समूह की ओर से हरियाणा के गुरुग्राम में 29 सितम्बर को एक समारोह में विट्टी इंटरनेशनल स्कूल, उदयपुर ने सह शिक्षा सर्वश्रेष्ठ स्कूल वर्ग में द्वितीय रैंक प्राप्त की। तय मानकों के आधार पर हुए चयन के तहत लगातार दूसरे वर्ष विद्यालय को यह सम्मान प्राप्त हुआ। विद्यालय की निदेशिका प्रीति सोगानी एवं प्रधानाचार्या शुभा गोविल ने प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया।

अड़िन्दा पार्श्वनाथ मंदिर में पूजा स्नानागार का लोकार्पण

उदयपुर। अड़िन्दा पार्श्वनाथ मंदिर में स्व. मोहनलाल भदावत की पुण्य स्मृति में पिछले दिनों पद्मावती शिक्षण संस्थान (द स्कॉलर्स एरिना) द्वारा पूजा स्नानागार का लोकार्पण ट्रस्ट अध्यक्ष बसंतीलाल थाया, सचिव भगवतीलाल टाया, रूपलाल जैन, श्रीमती संतोष जैन, भूरालाल जैन एवं मनोहर लाल जैन के सान्निध्य में हुआ। अतिथियों ने लोकार्पण समारोह में अड़िन्दा पार्श्वनाथ मंदिर के विकास में स्व. भदावत के योगदान को याद करते हुए उनके त्याग, समर्पण व सहयोग का उल्लेख किया।

मंदिर में शांतिधारा पाठ के पश्चात् श्री पद्मावती माता की पूजा-अर्चना की गई। इस अवसर पर अक्षय जैन, प्रमोद जैन, डॉ. शर्मिला जैन एवं द स्कॉलर्स एरिना परिवार के समस्त सदस्य उपस्थित

थे। कार्यक्रम का संचालन द स्कॉलर्स एरिना के प्रशासक डॉ. लोकेश जैन ने एवं आभार ज्ञापन संस्था सचिव अनिल मेहता ने किया।

'फैमिली बिजनेस' कार्यशाला

उदयपुर। चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के तत्वावधान में गत दिनों यूसीसीआई में फैमिली बिजनेस कार्यशाला का आयोजन हुआ। संस्थान अध्यक्ष हंसराज चौधरी, उपाध्यक्ष अंशु कोठारी, प्रो. कविल रामचंद्रन, सिक्योर मीटर्स प्रबंध निदेशक संजय सिंघल, यूसीसीआई एक्सीलेंस अवार्ड सब कमेटी चेयरपर्सन नंदिता सिंघल, आईएमएम निदेशक प्रोफेसर जनत शाह एवं अन्य ने विचार व्यक्त किए। संचालन मानद महासचिव केजार अली ने किया।

अलख नयन के प्रयास से 15 गांव अंधता मुक्त

उदयपुर। अलख नयन आई इंस्टीट्यूट के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एल. एस. झाला ने बताया कि अलख नयन नेत्र चिकित्सालय ने पिछले दो दशकों से अनेक लोगों को अंधतामुक्त कर सुदृष्टि प्रदान की है। दो दशकों में हॉस्पिटल द्वारा 9 लाख से अधिक लोगों को नेत्र चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई एवं 84 हजार से अधिक लोगों के मोतियाबिंद के ऑपरेशन किये गए। मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. लक्ष्मी झाला एवं एक्जीक्यूटिव ट्रस्टी मीनाक्षी चूंडावत के अनुसार हॉस्पिटल ने नेत्र स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत आदिवासी क्षेत्र झाड़ोल तहसील के 15 गांवों को अंधता से निजात दिलाई। अब 50 गांवों को अंधतामुक्त करने का लक्ष्य है।

टर्की को निर्यात की व्यापक सम्भावनाएं

उदयपुर। डॉलर के गिरते मूल्य के चलते भारत से टर्की को निर्यात में वृद्धि हुई है। उदयपुर से हैण्डीक्राफ्ट उत्पादों के टर्की में निर्यात की व्यापक सम्भावनाएं हैं। यह जानकारी टीआईसीसीआई के उपाध्यक्ष सबन कुकुक्जोरोग्लू ने दी। बैठक के आरम्भ में उपाध्यक्ष डॉ. अंशु कोठारी ने यूसीसीआई की ओर से टीआईसीसीआई के उपाध्यक्ष को पौधा भेंटकर स्वागत किया। मानद महासचिव केजार अली ने उदयपुर संभाग के उद्योगों एवं व्यावसायिक परिदृश्य के बारे में जानकारी दी।

जरूरतमंदों को लाभ पहुंचाएं : उपाध्याय

उदयपुर। खान एवं भू-विज्ञान विभाग के निदेशक जितेन्द्र उपाध्याय ने कहा कि राज्य में जिला खनिज फाउण्डेशन ट्रस्ट के तहत 12 हजार कार्यों की स्वीकृति जारी की जा चुकी है। इस फाउण्डेशन के तहत होने वाले कार्यों की समीक्षा एवं उचित क्रियान्वयन हेतु ग्राम पंचायत, समिति एवं जिला परिषद के लोगों को उचित प्रशिक्षण की जरूरत है ताकि इस फण्ड से खनन एवं प्रभावित लोगों को उचित राहत प्रदान की जा सके। वे माइनिंग इंजीनियर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित सेमिनार में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। विशिष्ट अतिथि एमपीयूटी के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा, एमईएआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरूण कोठारी ने भी विचार रखे। प्रारम्भ में चेप्टर अध्यक्ष डॉ. एच. एस. राठौड़ ने स्वागत किया। संचालन टेक्निकल एवं सेमिनार कमेटी के चेयरमैन आर. सी. कुमावत ने किया। खान एवं भूविज्ञान विभाग के अतिरिक्त निदेशक मधुसूदन पालीवाल ने आभार जताया।

अक्षय पात्र से पांच हजार बच्चों को रोजाना भोजन

उदयपुर। भूख के कारण कोई बच्चा शिक्षा से दूर ना हो इसी उद्देश्य को लेकर काम कर रहे अक्षय पात्र फाउण्डेशन उदयपुर ने 12 अक्टूबर से उदयपुर जिले में 45 स्कूलों के पांच हजार स्कूली बच्चों को प्रतिदिन भोजन कराना शुरू किया है। अक्षय पात्र फाउण्डेशन के प्रबंधक चन्द्रसिंह राठौड़ एवं कार्यक्रम समन्वयक रघुपति दास ने बताया कि फाउण्डेशन भारत के 11 राज्यों के 41 केन्द्रों के माध्यम से लगभग 17.50 लाख सरकारी विद्यालयों के बच्चों को प्रतिदिन मिड-डे मिल उपलब्ध करवा रही है। राजस्थान में यह संस्था जयपुर, जोधपुर, नाथद्वारा, अजमेर, भीलवाड़ा, झालवाड़ एवं बारां जिले में लगभग 2.90 लाख विद्यार्थियों को मध्यान्ह भोजन के अंतर्गत गर्म एवं पौष्टिक भोजन के अंतर्गत गर्म एवं पौष्टिक भोजन पहुंचा रही है। संस्था द्वारा यह कार्य केन्द्र एवं राज्य सरकार के सहयोग से किया जा रहा है। उदयपुर में इस मिड डे मील के लिए चित्रकूट नगर स्थित अक्षय पात्र फाउण्डेशन पर मॉड्यूलर किचन बनवाया गय है। इस किचन में लगाई गई मशीन में एक घंटे में 40,000

अक्षय पात्र फाउण्डेशन का रसोईघर

रोटियां बनाई जा सकेगी वहीं दाल व अन्य सब्जियां बनाने के लिए 4 बड़े दाल कॉल्ड्रोन लगाए गए है जिनकी क्षमता 1200 लीटर है। इसमें 90 मिनट में दाल तैयार की जाएगी। वहीं चावल के लिए बने कूकर जिनकी क्षमता 600 किग्रा है में केवल 20 मिनट में चावल तैयार कर लिया जाएगा। सब्जियों के रखरखाव के लिए कोल्ड रूम सहित आटा नीडिंग मशीन, आलू पीलर मशीन व आईबीआर स्टीम बॉयलर लगाए गए हैं।

जय भवानी वड़ा पाव की 111वीं आउटलेट शुरू

उदयपुर। फास्ट फूड की गुजराती फर्म जय भवानी वड़ापाव का 111वीं आउटलेट का फतहपुरा में शुभारंभ हुआ । भाजपा शहर जिलाध्यक्ष दिनेश भट्ट एवं नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने आउटलेट का शुभारंभ किया। फर्म के किशनसिंह सेमल एवं आउटलेट संचालक अजयसिंह परमार ने अतिथियों का स्वागत किया।

जीवन में प्रबंधन ज़रूरी : श्रद्धा

उदयपुर। ईमानदारी व सच्चाई जैसे मूल्यों से ही जीवन में ऊंचे मुकाम पर पहुंचा जा सकता है। यह विचार महिला उद्यमी डॉ. श्रद्धा गट्टानी ने विद्या भवन पॉलीटेक्निक में आयोजित मेलज़ोल कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने विद्यार्थियों में उद्यमिता, नागरिकता व संवेदनशीलता के गुणों को विकसित करने के लिए आत्मशक्ति, दृढ़ निश्चय व मानवीय मूल्यों को ज़रूरी बताया। प्राचार्य डॉ. अनिल मेहता ने कहा कि परिवार, शिक्षा संस्थान में सीखे संस्कारों व मूल्यों से ही व्यक्ति व्यापक समाज, देश, मानवता के बारे में अपना दृष्टिकोण विकसित करता है।

मेलजोल कार्यक्रम को संबोधित करती डॉ. श्रद्धा गट्टानी

स्वीटी बनी मिस इंडिया कॉन्टेस्ट जज

उदयपुर। एनआईसीसी निदेशिका डॉ. स्वीटी छाबड़ा का वर्ष 2018-19 के मिस इंडिया कॉन्टेस्ट जज के तौर पर चयन हुआ है। हार्ट एण्ड सोल के संस्थापक संजय मित्तल ने डॉ. स्वीटी छाबड़ा को हार्ट एण्ड सोल वूमन राइजिंग का खिताब भी प्रदान किया है।

मुकेश जोशी नए अधीक्षक

उदयपुर। रेलवे सिटी स्टेशन के नए अधीक्षक(पर्यवेक्षक) मुकेश जोशी ने पिछले दिनों कार्यभार संभाल लिया। उनकी नियुक्ति 30 सितम्बर 2018 को 37 वर्ष की सेवाओं के बाद सेवानिवृत्त हुए सुगनचन्द वर्मा के स्थान पर की गई है।

शोक समाचार

जोधपुर। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के वरिष्ठ भ्राता

श्री कंवरसेन जी गहलोत का 18 अक्टूबर, 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदया पत्नी श्रीमती आशा देवीजी, पुत्र राजेश व पुत्रियां श्रीमती सरिता परिहार तथा श्रीमती सुनीता कच्छवाहा और पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। स्व. भंवरलाल जी पानेरी (गुर्जरगौड़) की धर्मपत्नी

श्रीमती कमला देवी जी पानेरी (गुर्जर गौड़) का 6 अक्टूबर, 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र अम्बिकेश पानेरी व विनोद पानेरी(महासचिव, शहर जिला कांग्रेस कमेटी) तथ पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। **वैद्य भगवान लाल शर्मा** पुत्र प्रेमशंकर नागदा

गींगला वाला का 22 सितम्बर, 2018 को उनके सेक्टर 14 स्थित आवास पर देहावसान हो गया। वे 85 के थे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती कमला शर्मा, पुत्र कृष्ण कुमार, दिनेश नागदा, पुत्रियां श्रीमती रजनी, मंजूदेवी व गायत्री नागदा तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। स्व. मनोहर सिंह जी बाबेल के सुपुत्र **श्री मोतीसिंह जी बाबेल** का निधन 9 अक्टूबर, 2018 को हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती विमल जी, पुत्र भूपाल सिंह, हेमेन्द्र व कमल प्रकाश सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। **श्री सोहनलाल जी बर्मन (बर्मन बिल्डर्स)** का 13 अक्टूबर, 2018 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती उमा बर्मन, पुत्र विशाल व राहुल तथा पुत्री गजल चावला तथा उनका समृद्ध-सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। युवा होटल व्यवसायी एवं समाजसेवी

श्री लोकेश जी कुमावत का दिनांक 7 अक्टूबर 2018 को असामयिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल माता श्रीमती गीता देवी(पूर्व पार्षद), धर्मपत्नी श्यामा देवी, पुत्र ईश्वर व पुत्रियां पूजा तथा दर्शना सहित भाई-भतीजों का वृहद एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। **श्री बसन्तीलाल जी नलवाया**

सुपुत्र श्री सोहनलाल जी नलवाया का 29 दिसम्बर 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती माया देवी, पुत्र मुकेश, धर्मेन्द्र व राजेश नलवाया तथा पुत्री श्रीमती स्नेहलता सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र सहित समृद्ध व सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री गोपीचंद जी वीरवानी की सहधर्मिणी

श्रीमती लक्ष्मीदेवी वीरवानी का आकस्मिक स्वर्गवास 7 अक्टूबर, 2018 को हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, पुत्र दीपक, पुत्रियां वंदना सावलानी, कंचन सितालानी तथा भाई-भतीजों व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। स्व. पुष्कर जी पानेरी की अर्द्धांगिनी **श्रीमती कौशल्या देवी पानेरी** का 13 अक्टूबर, 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र अरूण, स्व. दिलीप-पूर्णिमा व पुत्री सविता उपाध्याय सहित वृहद परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। **श्रीमती धर्मवती गोस्वामी** (धर्मपत्नी स्व. मगन भारतीजी) का 12 अक्टूबर 2018 को शिवलोक गमन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र लोकेश भारती, गिरीश भारती एवं पुत्री निहारिका सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

Manoj Jain
94141 55902

Happy Diwali

Deepak Jain
94613 84902

Mandeep
Bag Industries
(Regd. S.S.I.)

Mfg. :- School & College Bags, Strolley-Attechies
Shopping Bags, Purse & All Kinds of Complementary Bags

Visit : www.mandeepbagudr.com

A-6, Ganpati Vihar, Gayatri Nagar, H. M. Sec. 5
Udaipur (Raj.) e-mail : mandeepbagudr@rediffmail.com

HOTEL
RAJKAMAL
INTERNATIONAL
FOR EXCLUSIVE COMFORT & LUXURY STAY
123, By Pass Road, Bhuwana, Udaipur (Raj.) Ph. 0294-2440085, 2440770
08302614326, 09829113316
email: rajkamaludr@gmail.com, www.hotelrajkamal.com

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

VNP vijeta Namkeen

Perfect rising snacks.

VIJETA NAMKEEN PRODUCTS

Main Road Bhupalpura, Udaipur-313001, Rajasthan INDIA,
Contact No. : 0294-2415817, Mob. : 09828555227
E-mail ID. : vijetanamkeen@gmail.com

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

A Cool & Clean Venue for
Business Meetings & Conference

अशोका पैलेस

A Unit of आपकी अपनी अशोका बेकरी

2 Banquet Hall (A.C.) Garden & 12 Rooms Available

100 Ft. Road, Shobahgpura, Udaipur-313001 (Raj.) Mobile : 9829243207

NIDHI KAMAL

NIDHI KAMAL CO. PVT. LTD.. E 78, MEWAR INDUSTRIAL AREA,
ROAD NO. 1, MADRI, UDAIPUR-313003 Mobile 8094111189

Happy Diwali

KHETAN GROUP OF COMPANY'S

S.K. KHETAN INFRAPROJECTS PVT. LTD.

S.K. KHETAN GROUP

85-86, 'F' Block Sector 14, Hiran Magri, Udaipur -313002 (Raj.)
Phone. +91 294-2640999
E-mail:- info@skkhetaninfra.com Web.- www.skkhetaninfra.com

SERVICES

Complete solution for underground and opencast mining in coal and metal, Real Estate all type of civil work, road works, and crusher plants.

SHASHI KANT KHETAN
(Managing Director)